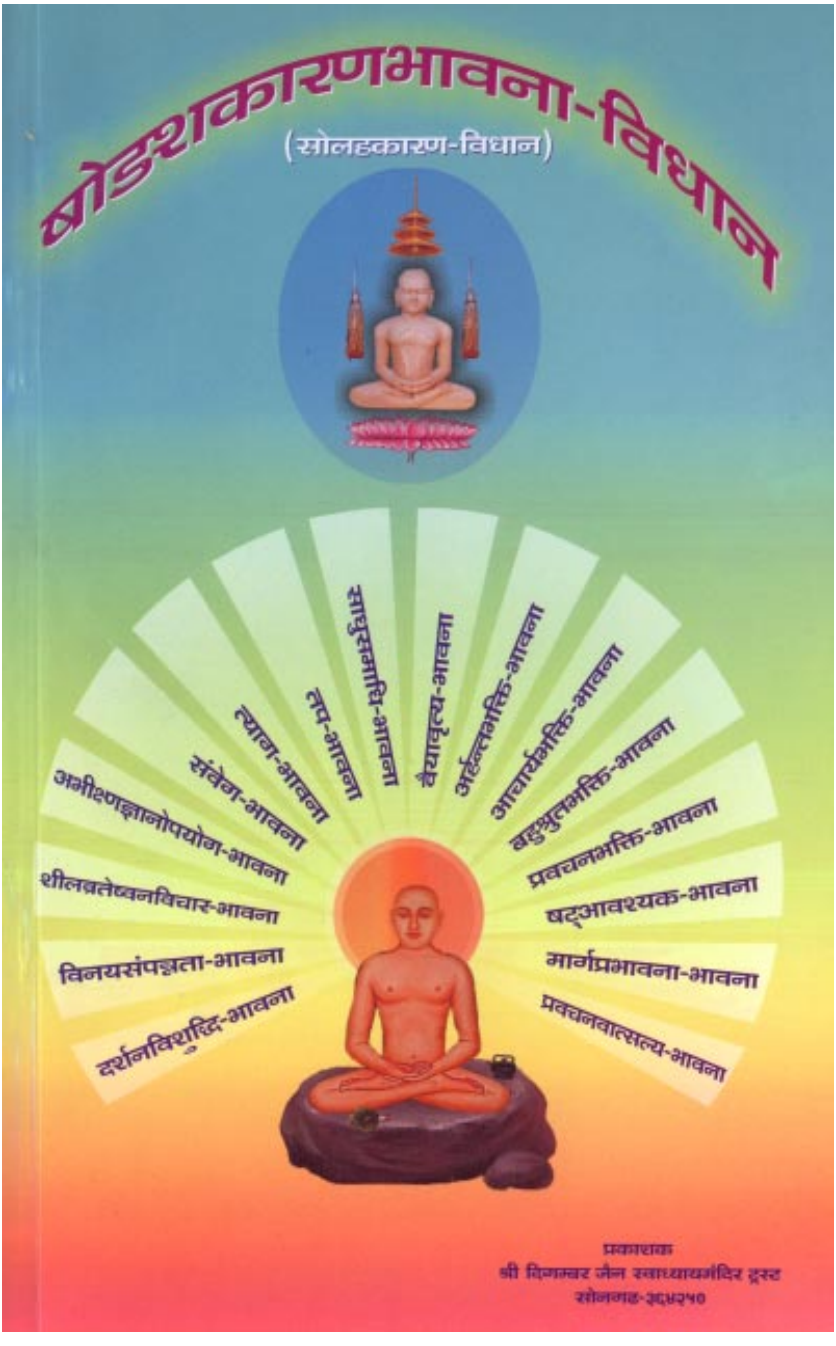
षोडशकारणभावना-विधान
(सोलहकारण-विधान)
दर्शनविशुद्धि-भावना
विनयसंपन्नता-भावना
शीलव्रतेष्वनतिचार-भावना
अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावना
संवेग-भावना
त्याग-भावना
तप-भावना
साधुसमाधि-भावना
वैयावृत्य-भावना
अर्हद्भक्ति-भावना
आचार्यभक्ति-भावना
बहुश्रुतभक्ति-भावना
प्रवचनभक्ति-भावना
षट्आवश्यक-भावना
मार्गप्रभावना-भावना
प्रवचनवात्सल्य-भावना
प्रकाशक
श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट
सोनगढ-३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प-१८९

ॐ

णमो तित्थयराणं।

[कवि टेकचन्दजीकृत]

श्री
षोडशकारणभावना-विधान
(सोलहकारण-विधान)

: प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट

सोनगढ़-३६४२५० (सौराष्ट्र)

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रथम आवृत्ति : प्रति ३०००

वीर सं. २५२२ ❑ वि. सं. २०५३ ❑ ई. स. १९९६

द्वितीय आवृत्ति : प्रति २०००

वीर सं. २५३२ ❑ वि. सं. २०६३ ❑ ई. स. २००६

मूल्य : १०=००

मुद्रक :

स्मृति ऑफसेट

सोनगढ़-३६४२५०

✆ : **(02846) 244081**

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

प्रकाशकीय निवेदन

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य सद्गुरुदेव श्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवंतो द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैन धर्म ही सनातन सत्य है' ऐसा युक्ति–न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य–गुण–पर्याय, उपादान–निमित्त, निश्चय–व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वोंके—गहन तथ्योंके–रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव–शास्त्र–गुरुकी सही पहिचान देकर भी मुमुक्षु समाजके उपर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे मुमुक्षु समाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी साभिरुचि एवं सोल्लास प्रवृत्ति नियमित चल रही है। वे स्वयं भी नियमितरूपसे जिनेन्द्रभक्तिमें उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनित प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्वर शुद्धाम्नायी जिनमंदिरों एवं वीतराग दिगम्बर जिनविम्बोंसे भर गया है।

अध्यात्मसाधनाकी पवित्र तीर्थभूमि सुवर्णपुरी (सोनगढ़)में, परमपूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीके भक्तरत्न प्रशममूर्ति धन्यावतार स्वानुभवविभूषित पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनकी जिनेन्द्रभक्तिभीनी प्रशस्त प्रेरणासे प्रसंगोपात्त अनेकविध मण्डलविधानपूजाएँ होती रहती हैं। इसके संदर्भमें–क्योंकि वि. सं. १९९३में निज-शुद्धात्मानुभवी धर्मरत्न पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनको समुत्पन्न जो धर्मसंबंधी लोकोत्तर जातिस्मरणरूप 'बहेनश्रीनो ज्ञान वैभव' उसके ग्रंथ प्रकाशन द्वारा हमारे परम तारणहार पूज्य कहानगुरुदेवकी धातकीखण्ड-विदेहक्षेत्रके 'भावी तीर्थंकरद्रव्य' रूप, आनन्दकारी लोकोत्तर महिमा मुमुक्षु जगतको सुविदित होनेसे–यह सद्विचार प्रस्तुत हुआ कि, सुवर्णपुरीमें आनंदोल्लास सह मनाये जानेवाले १०७वें कहानगुरु–जन्मजयंतीमहोत्सवके मंगल अवसर पर—जिन पवित्र भावनाको भाकर सब तीर्थंकरत्वयोग्य केवली या श्रुतकेवलीके पादमूलमें तीर्थंकर नामकर्मका बन्ध करते हैं और हमारे गुरुदेव भी भविष्यमें अपने तीर्थंकर-पिताके पादमूलमें यही भावनायें भाकर तीर्थंकरनामकर्मका बन्ध करके धातकीखण्ड—विदेहक्षेत्रके भावी तीर्थंकर होनेवाले हैं ऐसी—'षोडश-कारण भावना'की मण्डलविधानपूजाका आनन्दकारी आयोजन किया जाये। फलतः 'षोडश-कारणभावना'का यह नया शुद्ध संस्करण मुद्रित करानेका निश्चित हुआ। षोडश-कारणव्रतके विषयमें संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैं—

सोलहकारण-भावना जैनदर्शनकी एक महान विशेषता है। महान विशेषताका हेतु यह है कि स्वात्मानुभुतियुक्त निर्मल सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक यह भावना–समस्त, कतिपय या कोई एक–योग्य जीवको सबसे उच्च पुण्यपद जो तीर्थंकरपद है उसकी प्राप्तिके बन्धका कारण बन जाती हैं। वह जीव त्रिजगपूज्य सर्वोत्कृष्ट महान पुण्यात्मा बन जाता है। यह उपासनोत्सव माघ, चैत्र और भाद्रपदमें ३१–३१ दिनका होता है। पर वर्तमानमें केवल भाद्रपदमें ही लोग पूजोत्सव करते हैं। यह मासिक व्रत है। इसका प्रारंभ भी प्रतिपदासे और अन्त भी तीसरी प्रतिपदाको करना चाहिये। तिथिके क्षय-वृद्धिका इसमें असर नहीं होता।

मण्डलमें मूल १६ कोठे और उनमें भावनाओंके भेदके अनुसार निम्न प्रकार संख्यामें फूल या कोई चिह्न बनाये जावें–

(१) दर्शनविशुद्धि-भावनाके ६८; (२) विनयसंपन्नता भावनाके ५; (३) शीलव्रतेष्वनविचार-भावनाके २५; (४) अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-भावनाके २०; (५) संवेग-भावनाके २०; (६) त्याग-भावनाके १३; (७) तप-भावनाके १४; (८) साधुसमाधि-भावनाके ८; (९) वैयावृत्य-भावनाके ११; (१०) अर्हन्तभक्ति-भावनाके १३; (११) आचार्यभक्ति-भावनाके ४३; (१२) बहुश्रुतभक्ति-भावनाके २८; (१३) प्रवचनभक्ति-भावनाके १८; (१४) आवश्यकापरिहाणि-भावनाके ७; (१५) मार्गप्रभावना-भावनाके ११; (१६) प्रवचनवात्सल्य-भावनाके ११;–इस प्रकार षोडशकारणभावनाके कुल ३१५ गुण (अर्घ्य) हैं। इस विधानमें महाअर्घ्य १६ एवं एक समुच्चय–इस प्रकार १७ महार्घ्य होते हैं।

प्रस्तुत षोडशकारण-भावनाविधान (सोलहकारण-विधान) कवि टेकचन्दजी कृत है। यह संस्करण–'वीर पुस्तक भण्डार', जयपुरसे प्रकाशित संस्करण, जो कि जयपुरके शास्त्रभण्डारोंकी सहायतासे संशोधन करके छपाया गया है उसके आधारसे,–मुद्रित किया गया है। और इस संस्करणका मुद्रणकार्य 'स्मृति ऑफसेट, सोनगढ'ने सुंदर ढंगसे कर दिया है। अतः यह संस्था उन दोनोंके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है कि इस 'षोडशकारण-भावना' पूजाग्रन्थके प्रकाशनसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

वि. सं. २०५३, वै० शु० २,
१०७वीँ कहानगुरु-जन्मजयन्ती

साहित्य प्रकाशन समिति
श्री दि० जैन स्वाध्यायमन्दिर
ट्रस्ट,

ॐ

सोलह कारण विधान

[कवि टेकचन्द कृत]

(दोहा)

मानौ[१] आनौ[२] मन गहौ[३], सोलह कारण भाव।
नमों, जजौं, जिनपद[४] मिलै, भलो मिल्यो शुभ दाव[५]॥१॥

(सोरठा)

ए धर्म कारण जान, स्वर्ग मुक्ति इनसौं मिलै।
होय पापकी हान, नितप्रति मंगल संपजै॥२॥

(चौपाई)

यह व्रत नरतन ही तै होई, देवनकौं अवसर नहिं कोई।
व्रतधारीकौं देवा पूजै, व्रत धारेतैं सब अघ धूजै॥३॥

(पद्धडी छंद)

यह वरत सकलमें ऊंच जान, ऊंचे पदको यह दाय मान।
ऊंचे ही नरपै होय सोय, पूजै सो भी जिय ऊंचे होय॥४॥

(अडिल्ल छन्द)

कर्म--शैल[६] को वरत वज्र सम जानिये,
जहां वरत तहँ अशुभतनी हो हानिए।
वरत बडो सुरवृक्ष[७] देय वांछित फला,
बिन वंछै जो करै धरै सिधकी शिला।५।

---

१. मानो- श्रद्धान करो, २. हृदयमें लाओ, ३. मनमें ग्रहण करो,
४. तीर्थंकरपद, ५. अवसर, ६. कर्मरूपी पहाड, ७. कल्पवृक्ष।

(गीता छन्द)

यह वरत वह्नि[१] कर्म--वनको, पाप बेल कुठारजी।
अशुभ घनको पवन दीरघ, मिथ्यात्व-तम, रवि सारजी।
करण-करि[२] को हरि[३] समाना, मन-कपिको श्रृंखला[४]।
शुभ ध्यान मंदिर, नाव भवदधि, व्यसन मल जीतन भला।६।

(चौपाई)

यह व्रत करै विनयजुत कोय, तो चवगति भरमन नहिं होय।
पूजे यह व्रत मन वच काय, जगत पूज्यपद सो जिय पाय।।७।।

(भुजङ्गप्रयात छन्द)

यह वरत सारं हरै पाप भारं, यह वरत नीका हरै शोक जीका।
यह वरत जूना[५] करै दूर खूना[६], यह वरत प्यारा करै पाप न्यारा।।८।।

(छन्द त्रिभंगी)

जो यह व्रत ध्यावै, नवनिधि पावै, पुण्य बढ़ावै, अघ भानी।
यह व्रत सुखदाई, देत बड़ाई, सव जिय भाई, हितदानी।।
या वरत प्रभावै, पूज्य कहावै, ज्ञान बधावै, शिवकारी।
यह वरत सुमित्ता, कर दे चित्ता, महा पवित्ता, भवतारी।९।

(मुनयानन्दकी चाल)

आदि इस वरतकी ओपमा है घनी,
कही जिनदेव निजवाणीमें सब भनी।
तनिक सी यहां कही राग व्रत कारनै।।
सुनौ भव्य करौ यह वरत दुःख टारनै।१०।

★ इति व्रत महिमा ★ (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

❀

१–अग्नि २–इन्द्रिय रूपी हाथी, ३–सिंह ४–सांकल, ५–प्राचीन / ६–क्रोध

षोडश-कारण समुच्चय पूजा

अथ स्थापना

(त्रिभंगी छन्द)

यह सोलहकारण भवदधितारण, काज सुधारण गुणधारी।
यह पाप नशावै शुभ फल त्यावै, ध्यान बढावै शिवकारी॥
तीर्थङ्कर पद दे जगथुति फलजै, पूजौ भवि ते हित भारी।
मैं मनवचकाई यह गुन भायी[1], थापन लाई मद टारी॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणानि ! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्।

(गीता छन्द)

तन कर पवित्र सुधार वसु तर, भक्ति मन वच लायजी।
ले कनक झारी रतन जड़ित सु, चित्तमें हरषायजी॥
भर नीर गंगातनौ निरमल, गंध तहँ अधिकाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः जलं० ॥१॥

ले बावनो चंदन सु निरमल, नीरतैं घसि सारजी।
धर कनकपातर भाव शुभ करि, सकल मदको मारजी॥
कर कायमनवच शुद्ध परणति, भक्ति उर बहु लाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः चंदनं० ॥२॥

उज्वल अखण्डित बीन नखशिख, लाइए हितकारनै।
बहु गंधजुत शुभ धोय अक्षत, महा पुनि-फल[2] धारनै॥

---

१. भावना भाकरके, २. पुण्य-फल।

करि भावना अति शुद्ध मन वच, काय जोग लगाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः अक्षतं० ।।३।।

ले फूल सुरतरु कनक चांदी, और कृत्रिम जानिये।
शुभ गंध गुंजत भ्रमर तिनपै भले पुनि अनुमानिए।
धरि भक्ति हिरदै कायमनवच, हर्ष बहु उपजाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः पुष्पं० ।।४।।

कर तुरत नेवज आदि मोदक, भले रस मिलवायजी।
तिस देखतै नैवेद्यको, दुख रोग भूख नशायजी।।
सो लेय निज कर धार हिरदै, भक्ति भाव लगाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः नैवेद्यं ।।५।।

धर रतनदीपक कनकपातर, आरती शुभ चित करौ।
बहु हर्ष मनवचकाय धरिकै, मोहतम नाशन करौ।।
हो ज्ञान ता फल भलो केवल, सकल संशय जाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः दीपं० ।।६।।

धूप दशधा अगर चन्दन, अरु सुगन्ध मिलायजी।
सो खेयकरि फल कर्मक्षय हो, घनी कहा वरनायजी।।
तिस धूप को ले गंध लोलुप, भ्रमर शब्द कराय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः धूपं० ।।७।।

फल लेय श्रीफल लोंग खारक, भले और बिदामजी।
इन आदि और अनेक शुभ फल, लेय सुख के कामजी।।

कर कायमनवच भक्ति नीकी, राग उर बहु लाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः फलं० ॥८॥

जल भलौ चन्दन सुभग अक्षत, पुष्प चरु दीपक सही।
फिर धूप फल इमि आठ द्रव्य, भलै भावन अघ दही॥
धर भक्ति मनवचकाय हिरदै, आरती शुभ दाय है।
मैं जजौं षोडशभावना, शुभ तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः अर्घ्यं० ॥९॥

(दोहा)

दर्शविशुद्धि आदि शुभ, षोडश भावन सोय।
तिनकौं पूजौं भाव धरि, तीर्थङ्कर पद होय॥१०॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यः अर्घ्यं।

जयमाला

(चोपाई)

षोडशभावन पावन जान, यह तीर्थङ्करपद फल दान।
याको ध्याय भए जिन घनै, च्यार घातिया कर्म जु हनै।१।

भो भवि! षोडशकारण करौ, ताकी विधि हिये में धरौ।
तीन प्रकार वरत को करौ, जघन्य मध्य उत्कृष्टै घरौ।२।

मास एक उपवास कराय, सो उत्कृष्ट जु विधि मनलाय।
बेले बेले पारण करै, तथा एकन्तर अनशन धरै॥३॥

जो लघुशक्ति धार जिय होय, पांचों परवी अनशन जोय।
यातें भी लघुशक्ति धरै, तो षट्वास नांहि परिहरै॥४॥

ताकी विधि ऐसी जू जान, आदि अन्त दो पडवा आन।
दो आठै दो चौदश वास ये षट्वास जघन्य विधि भास॥५॥

बाकी दिन एकाशन करै एक बार सो भोजन धरै।
फेर न लहै नीर को सोय, ऐसे वरत करत सुध होय॥६॥

षोड़शवर्ष करै जिय सोय, फेर उद्यापनकी विधि होय।
नांही वरत दुगुना करै, पीछे शक्तिसमा व्रत धरै॥७॥

जो फिर शक्ति होय तो धीर, आयु लगैं करनौं वरवीर।
यह सामान्य वरत विधि जान, और विशेष ग्रंथतैं भान। ८।

(सोरठा)

या विधि षोडशभाव, जो भवि पूजै भाव सौं।
सोजन जिनपद पाय, और कहा फल गाइये॥९॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि–षोडशकारणेभ्यः महार्घ्यं नि०॥१॥

१. दर्शनविशुद्धिभावना-पूजा

(मुनयनानन्द की चाल)

भावना दर्शविशुद्धिसो जानिए तासमधि दोष पच्चिस नहिं मानिए।
या विना मोक्षकूं और अंग ना करै, जजौ इमि जान इहां थापि सो अघ हरै।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः॥
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना ! अत्र मम संन्निहिता भव भव वषट्।

(मुनयनानन्दकी चाल)

गंगको नीर मह निरमलौ जानिए, रतनतैं जड़ित शुभ पात्रमें आनिए।
पूजिये भावना दर्शनविशुद्धिया, या विना मोक्ष मारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै जलं० ॥१॥

सुभग चंदन घस्यो नीर गंगा थकी, कनक झारी धरौ भक्ति मुखतैं जकी।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्ष मारग नहीं किन लिया।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै चंदन० ॥२॥

सुभग अक्षत महा ऊजरे गंधमई, भक्तिभावन थकी हर्ष उरमें लई।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अक्षतान्० ॥३॥

फूल सुर वृक्षके गंधजुत लाइये, होय प्रफुल्ल उर फूल चढ़वाइये।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै पुष्पं० ॥४॥

सुभग चरु लेय षट्रस तनै सारजी, कनकपातर विषैं भक्तितैं धारजी।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नैवेद्यं० ॥५॥

दीप मनके हरा रतनमयसारजी, कनक भरि थालकरि आरती धारजी।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्ष मारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै दीपं० ॥६॥

धूप दशधा ममहा गंध जुत सब लई, खेय वह्नि विषैं भक्ति मुखतैं चई।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्षमारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै धूपं० ॥७॥

सुभग श्रीफल भले आनि फल सारजी, भक्तकूं देत है मुक्तिफल धारजी।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्ष मारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै फलं० ॥८॥

नीर चंदनाक्षत पुष्प चरु दीपजी, धूप फल लेय करि अर्घ शुभ टीपजी।
पूजिये भावना दर्शविशुद्धिया, या बिना मोक्ष मारग नहीं किन लिया॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं० ॥९॥

भावना भली यह दर्शविशुद्धिया,
सकल धर्म अंग के मुख्य यह जिन चया।

या भये मोक्षमग निकट भासै सही,
जानि इमि भली हम अर्घ करतैं ठहीं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै महार्घ्यं नि० ॥१०॥

प्रत्येक अर्घ

(मुनयनानन्द की चाल)

धर्ममारग विषैं शंक ताकैं नहीं, होय निरभै गुरु देव धर्म पद ठही।
भेद विज्ञानमें शंक नहिं आय है, भाव सौं दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं निःशंकितगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१॥

धर्म सेवे नहीं चाह हिरदैं करै, भोग चक्री सुरा इन्द्रके परिहरै।
एक शिवचाह, अनि भूल नहीं पाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं निःकांक्षितगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

देख परवस्तु चित्त घिन नहीं आनि है, रूप शुभ अशुभ सब पुद्गलके मानि है।
निर्विचिकित्स गुण जीव हितदाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अमूढदृष्टिगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥३॥

देवगुरुधर्मको परख सेवै सही, बिन परीक्षा गुरु देव सेवै नहीं।
दृष्टि सांची सरध उर विषै पाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अमूढदृष्टिगुणसहितदर्शविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥४॥

देख परदोषकूं नाहिं मुखतैं कहै, दोष परके सदा ढांकणों उर चहै।
सदा चित्त शांत करुणामई पाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं उपगूहनगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥५॥

धर्मतैं डिगतकौ थिरी सौ करत है, देत उपदेश मन--भरमको हरत है।
धर्मधर आप फिर और धर्मदाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं स्थितिकरणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥६॥

देख धर्मी भली प्रीति तासौं करे, गऊ लख पुत्र ज्यों हर्ष मनमें धरै।
धर्म अंगधार हितकार गुणपाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं वात्सल्यगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥७॥

मन वचन काय धन बुद्धि तपतैं सही, मति श्रुतज्ञान मनपर्ज अवधि कही।
धर्म परभाव इनतैं करै भाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं प्रभावनाअंगसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥८॥

आठ गुन ए धरैं शुद्ध सरधा करैं, तत्त्व-सरधानमें भरम नाहीं परै।
आप चिद्रूप, पर देख जड़ भाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अष्टगुणसहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

मातृपक्ष मद करै हर्ष मनमें धरै, नान मम माम बहु धान धन अनुसरै।
जातिमद जान यह नांहि उर लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं जातिमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१०॥

द्रव्य बहु लाय हूँ बुद्धिबलतैं सही, दीप दधि मैं फिर्‌यो माल पैदा करी।
लाभमद जान यह नांहि उर लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं लाभमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥११॥

पितामह पिता मम बड़े पद धार हैं, द्रव्य बहु, हुक्म को सकै नहिं टार है।
जान यह कुलमद नांहीं उर लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुलमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१२॥

रूप हम तनु जिसो कामतन है सही, नैन कर शीश मुख महासुख की मही।
जान यह रूपमद नांहि उर लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं रूपमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१३॥

करौं तप मास, दो मास, षट् मासजी, और बहु तप करौं धारि अति सांसजी।
जान यह तपमद नांही इम भाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं तपमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१४॥

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

मो समान औरमें नाहिं बल जानिए, मैं बली महा प्रचण्ड अति मानिए।
जान बलमद यह नाहीं उर लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं बलमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१५॥

मैं पढ्यौ काव्य व्याकरण प्राकृत सही, निमित ज्योतिष घने ग्रन्थ देखे सही।
जान यह विद्यामद नांहि जो लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं विद्यामदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१६॥

मो हुकम आज नृप पंच सब मान हैं, लोकमें हम बड़े और नहीं जान हैं।
जान अधिकार मद उर नहीं लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अधिकारमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१७॥

जाति अरु लाभ कुल रूप तप बल सही, विद्या अधिकार मद आठ ये दुख मही।
जान दुखदाय मद अष्ट नहि लाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अष्टमदरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१८॥

धर्म सेवन विषैं शंक जो चित धरै, नांहि निरभय थकी धर्म बिच संचरै।
जान सम्यक्त्वको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं शंकादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१९॥

धर्मको सेय सुख वंछ है जगतमें, तासतैं आपने किए सब शुभ हनें।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कांक्षादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२०॥

देख पर वस्तु को घिन आने सही, कर्मको ठाठ समझै नहीं उर मही।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं विचिकित्सादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२१॥

देव धर्म गुरु जे परख बिन सेय हैं, मूढ़बुद्धिधार ते अशुभ फल लेय हैं।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टिदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२२॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

देख परदोष शठ आप मुखतैं कहै, दोषजुत चित्त उर मांहि दुर्जन रहै।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं परदोषभाषणदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२३॥

धर्म सेवनविषैं खेद जो जिय करै, अथिरता भाव उपजाय धर्म परिहरैं।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अस्थितिकरण-दोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२४॥

जीव धरमी थकी दोष जो उर करै, भाव वात्सल्यका सकल वो परिहरै।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अवात्सल्य-दोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२५॥

धर्म परभावना ताहि नहिं उर चहै, देख परभावना हर्ष नाहीं लहै।
जान यह सम्यकको दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अप्रभावना-दोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२६॥

दोष शंकादि ये आठ मन आनिये, इन भये नाश सम्यक तनौ जानिये।
अशुभ यह जानकर नांहि हरषाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं शंकादि-अष्टदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२७॥

योनिधर देव नहिं प्रभु पद तिनविषैं, तन धरै फिर मरै तिनहि प्रभुपद अखैं।
जान यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुदेवप्रशंसा आयतनदोषरहितदर्शनविशुद्धि भावनायै अर्घ्यं नि०॥२८॥

प्रभुपद बिना जगदेव जे हैं सही, भक्त इन ताहि लखि भला मानै वही।
जानि यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुदेवभक्त प्रशंसा आयतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥२९॥

जीवघाती धरम पापकी खानि है, जीव भोरे भजै महा शुभ मानि है।
जान यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुधर्म प्रशंसा-आयतनदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम्० ॥३०॥

जीवघाती धरम सेवका जोय है, ताहि परशंसजै आयतन होय है।
जान यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवप्रशंसा आयतनदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम्० ॥३१॥

विषय उपदेश गुरु क्रोध मानी सही, तिनहिं गुरु मान जे चहैं शुभकी मही।
जान यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुगुरुप्रशंसा आयतनदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम्० ॥३२॥

कुगुरु के भक्त जो सेव नीकी करै, देख ताको भलो जान शोभा धरै।
जान यह आयतन दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं कुगुरुभक्तप्रशंसा आयतनदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम्० ॥३३॥

देव की परख बिन प्रभु पद जो कहै, मूढ़ता देव की जीव सो सिर लहै।
जान यह मूढता दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं देवमूढतादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्य नि० ॥३४॥

दया बिन धर्म की सेव में जो परैं, परख बिन धर्म जो सेव को अनुसरै।
जान यह मूढता दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं धर्ममूढतादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि० ॥३५॥

परख बिन सेव जो गुरु तनी ठानिये, आप सिर भूलका अशुभ बंध आनिये।
जान यह मूढता दोष जो ढाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं गुरुमूढतादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि० ॥३६॥

आठ मद आठ शंकादि मल छानिये, आयतन जान षट्, मूढ त्रय मानिये।
दोष पच्चीस इन रहित सो भाय है, भावसों दर्शविशुद्धि सुखदाय है॥

ॐ ह्रीं अष्ट मद, अष्ट शंकादि दोष, षट् आयतन, त्रय मूढतादोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि० ॥३७॥

(गीता छन्द)

द्यूत आमिष सुरा गनिका, खेट चोरी जानिये,
परनार वांछा सात हैं, ये व्यसन अघफल मानिये।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

जो तजै, सांचौ दृष्टि ताकै, होय सब सुख आयजी,
जो धरै दर्शविशुद्धिभावन, भलो जिनपद पायजी।।

ॐ ह्रीं सप्तव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि०।।३८।।

जो द्यूत रमनौ चित्त वांछे, पाय दुख अघ खेत है।
ये सात व्यसन जु मूल जानौ जगत निंदा देत है।।
जो जान खोटे तजै याकों, भाव समता लायजी।
सो धरै दर्शविशुद्धिभावन, भलो जिनपद पायजी।।

ॐ ह्रीं द्यूतव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि०।।३९।।

सप्त धातन मांही निंदक, महाघिनकारी सही।
ता देखते ही असन तजिये खाय सो जिय अघ मही।।
जिय घात बिन नहिं होय आमिष, त्यागनौं बुध लायजी।
जो धरै दर्शविशुद्धिभावन, भलो जिनपद पायजी।।

ॐ ह्रीं आमिषव्यसन रहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यम् नि०।।४०।।

जो लहै दारू तजै सुध बुध, ज्ञान सकल नसाय है।
या अमल मांहीं मात भगनी, नार भेद न थाय है।।
यह व्यसन दारू हरै जुगभव, तजै पुण्य लसायजी।
जो धरै दर्शविशुद्धिभावन, भलो जिन पद पायजी।।

ॐ ह्रीं मदिराव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४१।।

यह जान गनिका जगत-पातल, झौंठ सम बुधजन कही।
जो रमैं यातैं धरम खोवै, महा अघकी सो मही।
यह व्यसन दुखदा जान त्यागै, महा पुण्य फल लाय है।
जो धरै दर्शविशुद्धिभावन, भलो जिनपद पाय है।।

ॐ ह्रीं गणिकाव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४२।।

(खड़गा छन्द)

आप सम जीवकौ घात कैसे करै, घाव किम देय आयुध तनौजी,
कंटतै काय कंपाय सब आपकी, दुख थकी रौय कहै मति हनौजी।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

मोधिया जीव हति भील या पारधी ऊंचकुल जीवको न सतावे,
त्याग खेटक व्यसन दया उरमें धरै, दर्शविशुद्धिभाव सो नाम पावै।।

ॐ ह्रीं आखेट-व्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४३।।

दाम परका हरै हरष मनमैं भरै, पाप निज सिर धरै मूढ प्रानी,
चोरके भाव छल छिद्र अधिका धरै, काय तज दुख लहै हीन ज्ञानी।
व्यसन यह चोर नर्क देय घनघोर दुख, लहै अधिकाय नहीं पार पावै,
त्याग यह व्यसन परिणतीको शुद्ध करै, वे विशुद्धभावसो नाम पावे।।

ॐ ह्रीं चोरव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४४।।

नारी पर चहै जो, सीस अघ लहै जो, सो त्यागै यह धर्म की राह जानै।
देख परतिया चित्त मात सम सो किया, बहन मम जान उर ज्ञान आनै।
व्यसन उर नांहि ते शुद्ध चित्त पाय जिय, होय समभाव शिव राह जावै।
त्याग परनारिका, व्यसन शुद्ध मन करै, दर्शविशुद्धिभाव सो नाम पावै।।

ॐ ह्रीं परदार-व्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४५।।

व्यसन ये सात नर्क सातके प्रीतमा, धर्मको दोष या जान त्यागै।।
होय जिनदास उर धार शिव आस भव्य, धर्मधार आप चित्त मांहिं जागै।
ते जग जस लहै, सफल भवतैं रहैं, नांहि जे व्यसन वश आप आवै।
भेदविज्ञानतैं आप पर भिन्न लखै दर्शशुद्धि भाव सो नाम पावै।

ॐ ह्रीं सर्वव्यसनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।४६।।

(बेसरी छन्द)

नहिं संक्रांति दान सरधाना, जानै आतमरूप पिछाना।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावैं, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं संक्रांतिदिवसदानदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४७।।

अगनि सेव नांहीं मन लावै, इसकी दया ठान सम थावै।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावैं, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं अग्निसेवरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४८।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

ग्रह नक्षत्र पूजा नहिं आनै, पूजै त्रिभुवनपति सुख मानै।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं ग्रहनक्षत्रसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४९।।

गोमूत्रादि पूंछ नहिं पूजै, अघ कारजतैं मन वच धूजै।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावैं, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं गोमूत्रादिसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५०।।

रतनपाषाण सेवता नांहीं, जानै पृथ्वीकाय सु ठांही।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं रत्नपाषाणादिसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५१।।

भूमिसेव पूजा परिहारै, पूजै जिन समता उर धारै।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं भूमिसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५२।।

पर्वतपतन थकी सुख होई, यह भ्रम उरमैं लहै न कोई।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं पर्वतपतनरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५३।।

नदी-स्नान शुद्ध नहिं मानै, ज्ञान-स्नान शुद्ध सरधानै।
नांहि अतत्त्वभाव उर लावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं नदीस्नानश्रध्धानरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५४।।

अगनिपाततैं मुक्ति न मानैं, मुक्ति एक शुध अनुभव जानै।
ज्ञानस्वभाव आप उर भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं अग्निपातरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५५।।

कुगुरुसेव श्रद्धा नहिं जाकै, वीतराग गुरु मानै ताकै।
ताकौ आतमज्ञान सु भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।५६।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

गज तुरंग वृष सेव न ठाने, सेवै जिनपद भक्ति जु आनैं।
भेदविज्ञान राह समझावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं वाहनसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।५७।।

जीवघात शस्तरतैं होई, सो शस्तर पूजै नहिं सोई।
आतमसेवा तिनकौ भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं शस्त्रसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।५८।।

हिंसा देव न पूजै भाई, वीतरागको जजैं सु जाई।
जो सांची सरधा उर भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं हिंसादेवसेवारहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।५९।।

निशि-अहार त्याग करि सारा, आतम अनुभौ भाव विचारा।
भेदज्ञानतैं निज पर भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं निशा-आहाररहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।६०।।

बिन छाने जलको नहिं पीवे, करुणा कर समतातैं जीवे।
चेतन आप अन्य जड़ भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं जलगालनविधिसहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।६१।।

खाय न फल कठूंबरा सोई, करुणाधर अचार शुभ होई।
निराकार फलको तो भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं कठुम्बरभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।६२।।

नांहि उदम्बर फल को लेवै, अभक्ष जान सब ही तज देवै।
परतैं विरचि आपमें आवै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं उदम्बरअहाररहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।६३।।

ऊमर फल अभक्ष्य नहिं खाना, शुभ आचारी दया निधाना।
चेतन देव आप सम भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।

ॐ ह्रीं ऊमरफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि०।।६४।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

वट फल जीवराशि नहिं खइये, दया धार उर समता लहिये।
तन विरक्त शुद्धातम भावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।
ॐ ह्रीं वटफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६५।।

पीपलफल जंगम थलरासी, खाय नहीं तिन करुणा भासी।
ममत छांडि जग आतम ध्यावे, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।
ॐ ह्रीं पीपलफलभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६६।।

मक्षी वमन निंद्य मधु जानौ, शुभ आचारीको नहिं खानौ।
रसनालोलुप तज हरषावै, सो सम्यक्दर्श पूज कहावै।।
ॐ ह्रीं मधुभक्षणरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६७।।

(गीता छन्द)

दरशनविशुद्धि भावना शुभ, दोष बिन निरमल सही,
यह मोक्ष वटका बीज नीका, या बिना नहिं शिवमही।
या देय तीरथनाथ पदवी, महा मंगलदाय है,
सो जजों दरशनभावना, शुभ काय मन वच लाय है।।
ॐ ह्रीं सकलदोषरहित-दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६८।।

जयमाला

पंचमङ्गलकी चाल

भो भवि दर्शविशुद्धि भावना जानिये,
दोष पचीस आदि नहिं तामैं मानिये।
सब गुनमें यह भावन पावन सार है,
सकल गुणनकी खान मान भवतार है।।

तारै जु भवदधि नाव जैसे करम संकट टारनी,
दे मोक्ष थानक पूज्य त्रिभुवन काज वांछित सारनी।
याकी जु महिमा कहे कवि किम पार गुण ताके नहीं,
गम्य ज्ञानी सकल जानै और को मुखतैं कहीं।।१।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

यह शुभ भावन जिनपद दानी जानिये,
मोक्ष वृक्षको बीज मिथ्यातम हानिये।
याही के परभाव समोसर्ण थाय है,
होत कल्याणक पांच सांच शिव पाय है॥

पाय पंचकल्याण शिव ले फेर जग नहिं आय है,
तन छांड जड़ चिद्रूप निवसै ज्ञान केवल पाय है।
यह सकल महिमा जान याकी भले फलकी दाय है,
तातैं जु सेय विशुद्ध दरशन भक्ति उर बहु लाय है ॥२॥

अब यह दर्शविशुद्धी निरमल भावना,
भाये वंछित मन फल नीका पावना।
षोडशकारण मांही कारण सार है,
याही तैं सब धर्म महा फलकार है॥

फलकार या बिन धर्म नांहीं करै विरथा जायजी,
बहु दान तप तन कष्ट संजम नांहि शिवफल दायजी।
तातैं जु शिवमग लोभिया जे सुरति[1] भाषित सौ करौ,
ए भावना शुभ काय मन वच आपनै हिरदै धरौ॥३॥

मैं भी सफल आप भव तब ही मानिहों,
दरशविशुद्धि भावन उर में आनिहौं।
या भावन भावे बिन भव वन में फिर्यो,
मानि मानि निज ठांम शीशतै अघ धर्यो॥

धार्यो जु सिरपै पाप समझै बिना दुख तातै लए,
अब काल तिनको निकट आयो भाव हम ऐसे भए।
भावै जु दर्शविशुद्धि मन वच काय जोग लगायजी,
ता कियो सबही धर्म नीको होय इम समझायजी॥४॥

१-श्रुति=आगम।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(दोहा)

दर्शविशुद्धि भावना, भावो मन वच काय।
तो बांधो पद तीर्थ को, और अधिक कहा गाय॥५॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं नि० ॥१॥

२. विनयसम्पन्नता भावना पूजा

(मुनयनानन्दकी चाल)

विनय सब धर्मको मूल जानो सही,
विनय बिन धर्मविधि सकल निष्फल कही।
जान इम थापना थाप इहां भायजी,
विनय सम्पन्नता जजौं मन लायजी॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

(मुनयनानन्दकी चाल)

नीर गंगातनो निर्मलो लाइये, कनक झारी विषैं धार शुभ पाइये।
पूजिये विनयतैं विनयभावन सही, तास फल निरमलो होय उर जिन कही।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै जलम् नि० ॥१॥

बावनो चन्दना नीर घसवाइये, रतन पातर विषैं धार गुन गाइये।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, तास फल चार गति पाप विनसै सही।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै चंदनं नि० ॥२॥

खंड बिन ऊजरे मुकतफल से कहैं, तन्दुला थालभर आपनै कर लहै।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, तासतैं अखय फल होय जिन धुनि कही॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

देवतरुके भले फूल शुभ आनिये, माल बहु गून्थ उर भक्ति मन ठांनिये।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, तास फल कामजुर नाश हो इम कही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै पुष्पं नि० ।।४।।

भेली षट्रसा नैवेद्य करनो भलौ, भक्ति भावन किये थाल में घर चलो।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, भूख की वेदना नाश ता फल रही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीप मणि रतन के ज्योति तम नाशजी, कनक भरि थाल ले आरती भासजी।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, नाश अज्ञान कर ज्ञान प्रगटै मही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै दीपं नि० ।।६।।

धूप वह्नी विषै अगरकी जारिये, गंध महा सुभग धर हाथ निज धारिये।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, आठ कर्म दहन होय वानि जिन इम कही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै धूपं नि० ।।७।।

सुभगफल लाय नारेल बादामजी, आदि खारक धने महा शुभ ठामजी।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही मोक्ष फल सो करै पूजिफल धुनि कही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै फलं नि० ।।८।।

नीर गंध अक्षतं पुष्प चरु दीपजी, धूप फल अर्घतैं कर्म सब लीपजी।
पूजिये विनयतैं विनय भावन सही, तास फल पूज्यपद लहै निश्चय कही।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अर्घ्यम् नि० ।।९।।

प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

पढै विनयतैं पाठ विनयतैं जो सुनैं,
धरे विनयतैं पुस्तक पुट्ठा शुभ ठनैं।
अक्षर चांदी कनक लिखावै सारजी,
विनयसार शुभ ज्ञान तनौं अधिकारजी।।

ॐ ह्रीं ज्ञानविनयभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१।।

दरशन शुध सरधान देखनौं जानिये,
अवलोकन गुण सारे विनयतैं आनिये।
श्रद्धा दृढ उरमांहि विनय सो सारजी,
विनयसार शुभ ज्ञान तनों अधिकारजी॥

ॐ ह्रीं दर्शनविनयभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

जतन समितिका करै गुपति पालै भली,
महावरत शुध करै विनययुत सब मिली।
करै जतनतैं सोय विनयविधि है सही,
चारित त्रयदश सार जजौं विधितैं मही॥

ॐ ह्रीं चारित्रविनयभावनायै अर्घ्यं नि० ॥३॥

यथायोग्य सब ठाम विनय सबको करैं,
देव-धर्म-गुरु सार भली थुति उच्चरै।
पूजैं चाव कराय भाव शुभ लायजी,
सो उपचार सु विनय महा सुखदायजी॥

ॐ ह्रीं उपचारविनयभावनायै अर्घ्यं नि० ॥४॥

विनय चार परकार और बहुभेद हैं,
पूजैं जो मन लाय भली तिस टेव है।
विनयभावना सार जगत में जानिये,
सो पूजैं मनलाय बड़ी गुन खानिये॥

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अर्घ्यं नि० ॥५॥

जयमाला

(वेसरी छन्द)

विनयभावना बहु सुखदाई, विनय भाव विन भव भरमाई।
धर्म मूल सब विनय है भैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया॥१॥

सोलह कारण में सिरदारा, विनयभावना है अघ-जारा।
विनय सकलको है सुख दैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।२।।

विनयभाव गुरुका जो कीजै, तो शुभ होय पाप सब छीजै।
विनय थकी सबने सुख पैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।३।।

विनय मानगिरि हरन प्रचण्डा, वज्रदंड सम है बलवंडा।
अविनय वनकौ बहि भैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।४।।

जगमें विनय धर्म परधाना, विनय सर्वका राखे माना।
विनय जिसा वल्लभ नहिं भैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।५।

तातैं विनयभाव उर लावो, तो सब जगमें महिमा पावो।
सबमें विनय मुकति गुन पैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।६।।

विनय सकल दोषनको खोवै, विनय मानमलको ले धोवै।
विनय ज्ञानतरुको पय पैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।७।।

कीजे विनय देव गुरु केरा, धरमकि विनय हरै भवफेरा।
विनय थकी जग विनय करैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।८।।

विनय भाव ताकै उर जागै, जा उर कुटिल भाव नहिं लागै।
विनयभाव सब दोष हरैया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।९।।

विनय इत्यादि बहुत गुणधारी, सब विधि मंगल विनय उचारी।
तातैं और घनी कहा कहिया, इम लखि विनय पूज सिर नैया।।१०।।

(दोहा)

तीर्थङ्करपद करनको, चतुर महा सुखदाय।
भवदधि-तारन नावसी, विनयभावना भाय।।११।।

ॐ ह्रीं विनयभावनायै पूर्णार्घ्यं नि० ।।२।।

३. शीलव्रतेष्वनतिचार-भावना पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पंचवाणतैं रहित बाडि नवजुत सही,
सहस अठारह अतीचार जामैं नहीं।
सर्व दोषतैं रहित शील सो भावना,
ताकौ इह शुभ भाय, थापि सिर नावना।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं सर्वदोषरहितशीलव्रतेष्वनतिचार भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(अडिल्ल)

पदम कुण्डको नीर सुनिर्मल लायकै,
झारी रतन भराय भक्ति मन भायकै।
शीलव्रतेषु भाव पूज हौं सारजी,
जनम जरा मल जाय होय भव पारजी॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जलं नि० ॥१॥

चंदन बावन पावनकारी सोहनौं,
निर्मल जल घसि लाय गंध मन मोहनौं।
शीलव्रतेषु भाव पूज भवि भायजी,
ता पूजाफल ताप जगत दुख जायजी॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै चंदनं नि० ॥२॥

अक्षत उज्वल नखशिख शुद्ध बखानिये,
सो ले उज्वल भावभक्ति मन आनिये।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
ताके पूजे दोषरहित पद पाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अक्षतान् नि० ॥३॥

देवद्रुमके फूल गंध रंग जुत सही,
कर तिनकी शुभ माल हाथ अपने लही।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
ताके पूजे दाह कामजुर जाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै पुष्पं नि० ॥४॥

नाना रस नैवेद्य भेद बहु लाइये,
मोदक फेणी सार थाल भरवाइये।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
भूखरोग क्षय होय निराकुल थाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै नैवेद्यं नि० ॥५॥

रतनदीप भरि थाल ज्योति परकासिका,
धारि आरती हाथ करम-तम-नासिका।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
मोहतिमिर हो नाश इसो फल पाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै दीपं नि० ॥६॥

धूप दशांग बनाय भक्ति उर लाय है,
अगनि मांहि ता जारि महासुखपाय है।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
कर्म अष्ट क्षय होय निरंजन थाय है।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै धूपं नि० ॥७॥

श्रीफल सार बिदाम दाख पिस्ता सही,
खारक आदि अनेक और फल सुख मही।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
ताके पूजे मोक्ष महाफल पाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै फलं नि० ॥८॥

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु दीपक सही,
धूप फला द्रव्य आठ जोरी अरघै ठही।
शीलव्रतेषु भाव पूज्य सुखदाय है,
सिद्ध लोक शुध थान तास फल पाय है॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(चोपाई)

शीलभाव नव बाड़ समेत, सो शिवनारी दे उर चेत।
आठ द्रव्य कर अर्घ बनाय, पूजौं शीलव्रतेषु भाय॥

ॐ ह्रीं नवबाडिसहित शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१॥

राग सहित तियतन नहिं जोय, ताकै शील भावना होय।
सो हौं आठों द्रव्य मिलाय, पूजौं शीलव्रतेषु भाय॥

ॐ ह्रीं रागसहित-स्त्री-तन-अवलोकनत्याग-शीलबाडिसहित-शीलव्रतेष्वनति-चारभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

राग वचन मुखतैं नहिं कहै, सुनिकै ताहि राग नहिं लहै।
ए लख शील दोष नहिं लाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।

ॐ ह्रीं रागवचन-रहित-शीलबाडिसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ॥३॥

पूरव भोग न चिंतै सोय, ताके शील बरत दृढ होय।
शीलभावना सब सुखदाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय॥

ॐ ह्रीं पूर्वभोगचिन्तारहित-शीलबाडिसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं०।४।

भोजन गृष्ठ मेवादि न लेय, दूध-घिरतपै भाव न देय।
शीलभावना सो दिढ लाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय॥

ॐ ह्रीं गरिष्ठभोजनरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं०॥५॥

पटभूषणतैं तन श्रृंगार, करै न शीलवरतको धार।
तानै यह व्रत सुरतरु पाय, सो हौं शील जजौं शिरनाय।।

ॐ ह्रीं तन श्रृंगाररहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।६।।

नारी जा पलंग पै सोय, तहं नहिं सोवे व्रतधर होय।
या फल जीव सुरग शिव पाय, सो हौं शील जजौं शिरनाय।।

ॐ ह्रीं स्त्री शय्या-शयनरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।७।

काम कथा न करै मुख सोय, दे चित्त कथा काम नहिं जोय।
ऐसो वरत शील सुखदाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं कामकथारहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।८।।

पेट धाप भोजन नहिं खाय, ताकै शीलवरत मन आय।
शीलदोष बिन सो शिवदाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं उदरभरभोजनरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।९।

कामचाहतैं सोच बढाय, उपजे दुख चित धीर न पाय।
यो तजि शीलभाव सुध भाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं कामचाहरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१०।।

हो संताप कामवश सोय, ता वेदनतैं अति दुख होय।
यो तजि शुद्ध शील मन भाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं संताप कामबाण रहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।११।

कामबाण ताके मन सोय, मन उदास उच्चाटन होय।
यो तजि शुद्ध शील तन भाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं उच्चाटनकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१२।।

कामबाण वश सुधि विसराय, तावश और न काज सुहाय।
या बिन शीलभाव सुखदाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं वशीकरण-कामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१३।।

कामबाण मोहित चित सोय, ताकौ हौल दिला चित होय।
या बिन शील शुद्ध जे थाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय।।

ॐ ह्रीं मोहनकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१४।।

ये ही पांच काम के बाण, है लोकीक शील की हांण।
इन बिन भाव शील हितदाय, सो हौं शील जजौं सिरनाय ।।

ॐ ह्रीं लौकिक-पंचकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१५।।

(अडिल्ल)

अब सुन पंच कहे श्रुति बाण सु काम के,
शील हरण को सूर नहिं किस आनि के।
यातैं रहित सुशील शुद्ध मनभाय है,
सो मैं पूजौं मनवचकाय लगाय है।।

ॐ ह्रीं पंचबाणकामरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१६।।

कामबाण करि पीड़ित चित तिस होय है,
देख तिया मन मुलकन हास्य बहोय है।
या दूषण तैं रहित शील शुध भाय है,
सो मैं पूजौं मनवचकाय लगाय है।।

ॐ ह्रीं मुलकनकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१७।।

बारबार तिय देखनकी बाँछा रहै,
और न कछु सुहावै अवलोकन चहै।
ऐसे मलतैं रहित शील शुध भाय है,
सो मैं पूजौं मन वच काय लगाय है।।

ॐ ह्रीं अवलोकनकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१८।।

देख नारि की तरफ हास्य चितको करै,
कामवचन तन ठान घनौ कौतुक धरै।
ऐसे अरितैं रहित शील शुध भाव है,
सो मैं पूजौं मनवचकाय लगाय है।।

ॐ ह्रीं हास्यकामबाणरहित-शीलबाड सहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।१९।।

सैनालैन बतावन कामी चित रहै,
नैन बाणतैं हाथ करन किरिया लहै।
ऐसे औगुण रहित शील जो भाय है,
सो मैं पूजौं मन वच काय लगाय है।।

ॐ ह्रीं सैनबतावन-कामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।२०।

काम सतावै ताहि जीव उर इम रहै,
मंद हास्य उर लहै देख तिय सुख चहै।
ऐसे पातक रहित शील जो भाव है,
सो मैं पूजौं मनवचकाय लगाय है।।

ॐ ह्रीं मंदहास्यकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।२१।।

नारितनौ सत्कार घनौं आदर करै,
नाना पट भूषण भोजन दे खुसी धरै।
ऐसे दूषण रहित शील शुभ भाव है,
सो मैं पूजौं मन वच काय लगाय है।।

ॐ ह्रीं स्त्रीसत्कारदोषरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।२२।।

नारि मिलनकी चाह सदा उर मांहिजी,
कामबाण यह जान महा दुखखानजी।

ऐसे अशुभ निवार शील गुनदाय है,
सो मैं पूजौं मन वच काय लगाय है।।

ॐ ह्रीं स्त्रीमिलापकामबाणरहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।२३।।

मन वच काय लगाय काम ऐसो करै,
तातैं वीरज क्षरै हरष मनमें धरै।
या दूषणतैं रहित शील शुभ भाव है,
सो मैं पूजौं मन वच काय लगाय है।।

ॐ ह्रीं वीर्यक्षयअतीचाररहित-शीलबाडसहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं० ।।२४।।

(दोहा)

इत्यादिक दूषण रहित, शीलव्रतेषु भाव।
तीरथपद यातैं मिलैं, मैं पूजों करि चाव।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषरहित-शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै महार्घ्यं नि० ।।२५।।

जयमाला

(दोहा)

सकल धर्म यातैं रहै, या बिन धर्म अधर्म।
तातैं सबमें शील शुभ, काटन खोटे कर्म।।१।।

(मुनयनानन्दकी चाल)

शील सब धर्मको मूल मन आनिये,
शीलगुण पूज्य सुरलोकतैं जानिये।
शीलसौ सार गुण और नहिं पाय है,
मैं नमौं शीलगुण शीश कर लाय है।।२।।
शील ही सर्वदा सांच शिवराह है,
शीलगुण कामकी हरत सब दाह है।

शील जगपूज्य मुनिराज इन ध्याय है,
मैं नमौं शील गुण शीश कर लाय है।।३।।
शील शिव-राह को वाहना सारजी,
शील ही मोक्ष दे करैं भवपारजी।
शील भवसागरा तार नौकाय है,
मैं नमौं शीलगुण शीश कर लाय है।।४।।
शील सरदार सब धर्म अंग में सही,
शील रवि कामतम नाश जिनधुन कही।
शील ही पापतरु हरन असि पाय है,
मैं नमौं शीलगुण शीश कर लाय है।।५।।
शील कपि काम बंधन भलि सांकरी,
शील मद मदन गज हरन हरि बांकरी।
शील धर्म केतुका दंड शुभ भाय है,
मैं नमौं शील गुण शीश कर लाय है।।६।।
शील समभाव का दाव कर चाव है,
शील सरिता हरै काम मल भाव है।
शील धर्मचक्र की किरण सुखदाय है,
मैं नमौं शील गुण शीश कर लाय है।।७।।
शील शुभ शरण अरु करण मंगल सही,
शील जिनदेव पदवी भली दे कही।
शील शाश्वत थला सर्वदा दाय है
मैं नमौं शील गुण शीश कर लाय है।।८।।
शील सों सार सज्जन नहिं कोयजी,
ताफलै सकल सुख सहज ही होयजी।
शील गुण सेवनौं शर्मदा भाय है,
मैं नमौं शील गुण शीश कर लाय है।।९।।

(सोरठा)

शील शिरोमणी धर्म, शील शाश्वतो पद करै।
शील हरै सब कर्म, शील जजौं यातैं सही॥१०॥

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै पूर्णार्घ्यं नि० ॥३॥

४. अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना-पूजा

(चौपाई)

करै निरन्तर ज्ञान अभ्यास, ज्ञान थकी शिव मारग भास।
ज्ञानभावना मंगल दाय, सो मैं थाप जजौं थुति लाय।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(चौपाई)

क्षीरोदधि को निरमल नीर, कनक झारि को भर हर-पीर।
पूजों ज्ञान भावना सार, ताफल होय जनम मृति छ़ार॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै जलम् नि० ॥१॥

चन्दन बावन पावन लाय, धार करौं उर भक्ति बढाय।
पूजौं ज्ञानभावना सार, तातैं आताप निवार॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै चन्दनं नि० ॥२॥

अक्षत उज्ज्वल मोती जिसा, खंड बिना शौभे शुभरसा।
पूजौं ज्ञान भावना सार, अक्षय फल की सो दातार॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै अक्षतान् नि० ॥३॥

सुरतरु फूल गंध रंग भला, तिनकी माला लेकर चला।
पूजौं ज्ञान भावना सार, मेटन मनमथ काम विकार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै पुष्पं नि० ।।४।।

नाना रस नैवेद्य बनाय, कंचन थाल भरे शुभ लाय।
पूजौं ज्ञान भावना सार, क्षुधा रोग करने को छार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीपक मणिका तुरत प्रकास, कंचन थाल भरे थुति भास।
पूजौं ज्ञान भावना सार, मोह तिमिर ता फल परिहार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै दीपं नि० ।।६।।

धूप अगर चन्दनकी लाय, अगनि खेवनेको उमगाय।
पूजौं ज्ञान भावना सार, कर्म अष्ट जालन दुख टार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै धूपं नि० ।।७।।

श्रीफल सार बदाम महान, खारक आदि भले फल आन।
पूजौं ज्ञान भावना सार, वांछित मोक्ष फलै हितकार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।८।।

जल चन्दन अक्षत पुष्प जेय, चरु दीपक अरु धूप फलेय।
पूजौं ज्ञान भावना सार, अद्भुत फल दायक निरधार।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।९।।

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

जो मतिज्ञानपयोग सु जान, उन्द्री मनद्वारे ह्वै आन।
अधिक छतीस तीनसै भेव, इनकी मन वच करि हौं सेव।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

श्रुतज्ञान मय वरतैं सोय, जो उपयोग घनी विध होय।
द्वादशांग के जानैं भेव, इनकी मन वच करिहौं सेव।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

(गीता छन्द)

निमित्त ज्ञान सु आठ मांही, मन वचन वरतैं सही।
निशदिन करैं अभ्यास तिनको, मरम को लख सब कही।।
सो जान ज्ञानोपयोग नीको, भली सरधा जुत गिनो।
मैं जजौं मनतन वैन शुध कर, अज्ञानतम ताफल हनो।।

ॐ ह्रीं अष्टनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।३।।

आकाशमें रवि चन्द्र तारा, मेघ पटलादिक लखै।
संध्या समय के चिह्न और, अनेक बातन को अखै।।
सो होय इनके निमित्त सेती, शुभाशुभ सो जानिये।
अंतरिक्ष निमित्त-पयोग ज्ञानसु, जजौं बहु थुति आनिये।।

ॐ ह्रीं अंतरिक्ष-निमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४।।

भूमिमें रतनादि कंचन, धातु खान सु जान है।
इन आदि और अनेक चिह्न, सु भौम के सब थान है।।
सो लखै ज्ञानोपयोग धारी, शुभ अशुभ जाने सही।
अंतरीक भौम निमित्त नीको, सो जजौं बहु धुनि कही।।

ॐ ह्रीं भौमनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५।।

मनुष तिर्यंच देहके शुभ, अशुभ चिह्न सु जानिये।
रस प्रकृति रुधिरादिक सु लखिकै, भली बुरी बखानिये।।
यह अंग निमित्त जु ज्ञान अद्भुत, महा सुख उपजायजी।
मैं जजौं ज्ञानोपयोग ऐसो, भलो अरघ मिलायजी।।

ॐ ह्रीं अंगनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

सुन शब्द नर तिर्यंच केरा, शुभाशुभ जानै सही।
खर शब्द धूधू काक स्याल सु, सारसा जो धुन कही।।
इन आदि वच सुनि कहे सुखदुख, सुर निमित्त सु जानिये।
मैं जजौं यह उपयोग ज्ञानो शीशनय थुति आनिये।।

ॐ ह्रीं सुरनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।७।।

जो मुसा तिल सिर गाल दाढी, पाँव कर में जोय हैं।
तिस निमित्त ज्ञान सु सकल जानैं शुभाशुभ जे होय हैं।
यह ज्ञान व्यंजन निमित्त नीको, भलो शुभ उपयोग है।
मैं जजौं मनवचकाय शुध करि, जान सुखदा भोग है।।

ॐ ह्रीं व्यंजननिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।८।।

तन विषैं स्वस्तिक कलश वज्र सु, मच्छ इन आदिक सही।
शुभ होय लक्षण देख इनको, शुभाशुभ भाखै कही।
यह ज्ञान लक्षण निमित्त आछ्यो, भले फल को दाय है।
सो जजौं मनवचकाय यह, उपयोग ज्ञान सु भाय है।।

ॐ ह्रीं लक्षणनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।९।।

तहँ पट आभूषण शीश करके, उर पगोंके जानिये।
तिनको सु काटै चौसरादिक, भेद तिनको आनिये।।
यह देख शुभ अरु अशुभ भाख, भेद सुख दुख दायजी।
यह छिन-निमित्त उपयोग ज्ञानौं, जजौं मनवचकायजी।।

ॐ ह्रीं छिन्ननिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१०।।

जो लखै सुपना शुभाशुभको, भेद सुखदुखजान है।
इन आदि अंग अनेक समझै, सकल भेद सु आन है।।
यह ज्ञान सुपन निमित्त नीको, बडे अतिशय धारजी।
सो जजौं ज्ञानपयोग मन वच, काय सुखमय सारजी।।

ॐ ह्रीं स्वप्ननिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।११।।

(अडिल्ल)

अंतरीक्ष फिर भौम अंग सुर व्यंजना,
लक्षण छिन्न जु सुपन निमित वसु भ्रमहना।
इनका चिंतवन दिना रैनि सो भाय है,
ज्ञानपयोग सु जजौं अरध शुभ लाय है॥

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्त-श्रुतज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१२॥

(गीता छन्द)

अब अवधिज्ञान विचार निशदिन, भले भाव लगाय है,
तिस रूप ही उपयोग वरतैं, तत्त्व भेद सु पाय है।
इस ज्ञानके त्रय भेद अद्भुत, मूरती सब विधि लखैं,
यह जान ज्ञानपयोग अवधि सु, जजौं ज्यौं सब अघ सुखै॥

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१३॥

यह जानि देशा-अवधि षट् विधि, कौन इस महिमा कहै।
सब लोकमें हो मूरती द्रव्य, भेद ताको सब लहै॥
इस रूप जो उपयोग वरतै, तत्त्वज्ञान बतावता,
सो जानि ज्ञानपयोग पूजौं, भलि विधि जस गावता॥

ॐ ह्रीं देशावधिज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१४॥

सुन अवधि परमा अधिक जानै, तास की महिमा घनी,
द्रव्य क्षेत्र काल सुभाव सबही, जान है गुण के धनी।
जानै असंख्या लोक खेतर मूरती, विधि सोय है,
मैं जजौं ज्ञानपयोग विधितैं, नहीं तहँ दुख कोय है॥

ॐ ह्रीं परमावधिज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१५॥

परमावधीतैं अधिक जानैं, द्रव्य खेतर काल की,
सर्वावधी सो जान भविजन, छिपै नांहीं बाल की।

जानै असंख्या लोक अधिके, काल भी संख्या गुना,
ता रूप जो उपयोग बरतैं, ज्ञान सो पूजौं मना।।

ॐ ह्रीं सर्वावधिज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१६।।

जो सरल मन वच काय किरिया, जान है त्रयकालकी,
सो ऋजु मनपरजय सुज्ञानी, पूज्य जग गुन पालकी।
ता रूप जो उपयोग बरतैं, ज्ञान सुखदा सारजी,
मैं जजौं मनवचकाय नमि नमि, भक्ति मुखतैं धारजी।।

ॐ ह्रीं ऋजुमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१७।।

सरल मन वा वक्र मनकी, शुभाशुभ जे भावना,
तें होय निज पर जीव विकलप, भेद सो सब पावना।
जो विपुल मनपर्यय सुज्ञानी, रहैं समभावन सही,
ते जजौं ज्ञानपयोग मन वच काय, नमि नमि थुति कही।।

ॐ ह्रीं विपुलमतिमनःपर्ययज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१८।।

(अडिल्ल)

केवलज्ञान महान सकल विध जान हैं,
ज्यों ज्यों भई रु होय, होयगी मान हैं।
मूरति और अमूरति काल अनन्त को,
जानत सारी बात जजौं जगमिन्त को।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१९।।

(गीता छन्द)

भेद और अनेक हैं सो, सकल जिन धुनि में कहैं,
यहां अल्प से व्याख्यान मांहीं कथन-प्रयोजन वरन है।
उपयोग भेद अपार जानौं, भेद को पावैं सही,
वश भक्ति द्रव्य मिलाय पूजौं, ज्ञान केवल शिव मही।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै महार्घ्यं नि० ।।२०।।

जयमाला

(दोहा)

ज्ञानाभ्यास सदा करै, मन वच काय लगाय।
अन्तर कहुं पावै नहीं, ज्ञानपयोग सु पाय॥१॥

(वेसरी छंद)

ज्ञानपयोग निरन्तर ध्यावै, धरम ध्यान में काल गुमावै।
ज्ञानाभ्यास जिसा वृष नाहीं, सब धरमन में यह अधिकाही।२।

ज्ञानाभ्यास तत्त्व बतलावै, ज्ञानाभ्यास ध्यान उपजावै।
ज्ञानाभ्यास वैराग्य बधावै, ज्ञानाभ्यास मोक्षपद पावै॥३॥

ज्ञानाभ्यास थकी जग पूजा, ज्ञानाभ्यास थकी अघ धूजा।
ज्ञानाभ्यास त्यागबुधि लावै, ज्ञानाभ्यास दोव सब ढावै॥४॥

ज्ञान गुणा कर ज्ञान बधावै, ज्ञानाभ्यास मुक्ति परणावै।
ज्ञान सकल संतन को प्यारा, ज्ञान सब जगमांहि उजारा॥५॥

ज्ञान सूर्य मिथ्यातम नासै, ज्ञानमेघ भवतप को फांसै।
ज्ञान सकल संशय को खौवै, ज्ञान पाप मलको सब धोवै॥६॥

ज्ञान क्रोधवह्नि को नीरा, ज्ञानतरु संजम पय वीरा।
ज्ञानाभ्यास जगत का बन्धू, ज्ञानाभ्यास हरै दुख दंधू॥७॥

(सोरठा)

ज्ञानाभ्यास सदीव, सुखदाई संसार में।
तातैं कर भवि जीव, जो चाहै समभाव को॥८॥

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोगभावनायै पूर्णार्घ्यं नि०॥४॥

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

५. संवेगभावना-पूजा

(अडिल्ल)

यो जग दुख भंडार रोग शोकै भर्यो,
ताको लख भवि जीव भयानक चित कर्यो।
भव दुखतैं भय खाय विरक्ति तनतैं करै,
सो संवेगता थाप जजौं भव-तप हरै।।

ॐ ह्रीं संवेगभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं संवेगभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं संवेगभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(बेसरी छन्द)

क्षीरोदधि का जल ले जाई, कनक झारि भर चित हरषाई।
भाव संवेग पूज हौं भाई, भवदुख बहू होय न आई।।
ॐ ह्रीं संवेगभावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चन्दन नीर थकी घस लाया, शुभ पातर धरि अति हरषाया।
भाव संवेग पूज हौं भाई, ता फल जग आताप नसाई।।
ॐ ह्रीं संवेगभावनायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत मुक्ताफल सम प्यारे, हरष धारि पातर में धारे।
भाव संवेग पूज हौं भाई, ता फल अक्षय पद उपजाई।।
ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

सुरतरु फूल लाय गंध धारी, माल करी शोभा अति भारी।
भाव संवेग पूज हौं भाई, ता फल काम नाश हो जाई।।
ॐ ह्रीं संवेगभावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नाना रस नैवेद्य बनाया, कनकपात्र भरि आनन्द पाया।
भाव संवेग पूज हौं भाई, ता फल भूख रोग नस जाई।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

दीपक रतन जोत परकासी, सो भर थाल भक्ति सुख भासी।
भाव संवेग पूज हौं भाई, तातैं मोह रैन नस जाई॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

धूप अगर चन्दन की आनो, वह्नी खेय हरष अति मानो।
भाव संवेग पूज हौं भाई, तातैं अष्ट कर्म जरि जाई॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

श्रीफल लौंग बिदाम सुपारी, खारक पिस्तादिक फल भारी।
भाव संवेग पूज हौं भाई, मोक्ष ठाम ताके फल पाई॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प लाई, चरु दीपक फल धूप सुधाई।
भाव संवेग पूज हौं भाई, अभय धाम ताफल मिल जाई॥

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(बेसरी छन्द)

यह संसार महा भयकारा, च्यार गति दुख रूप भंडारा।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै॥

ॐ ह्रीं संसारभयभीत-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१॥

देव मरण कालैं दुख पावैं, ज्ञानी सो गति भूल न चावै।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै॥

ॐ ह्रीं देवगति-दुःखभयविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

मानुषगति अति दुखका भारा, यातैं ज्ञानी को भयकारा।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥३॥

नारक गति वेदन लख भाई, ज्ञानी पाप थकी भय लाई।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं अघ भागै।।
ॐ ह्रीं नरकगतिदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४।।

पृथ्वीकाय तनैं दुख भारी, छेदन भेदन अति दुखकारी।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै।।
ॐ ह्रीं पृथ्वीकायदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५।।

जलके दुखकी को मुख गावै, जानै सो जिय पाप गमावैं।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागैं।।
ॐ ह्रीं जलकायदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६।।

अगनिकाय दुख ही का गेहा, यातैं किम उपजै मन नेहा।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै।।
ॐ ह्रीं अग्निकायदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।७।।

पवनकायमें दुख अति भाई, हाथ पांव लागै क्षय जाई।
यातैं विरचि धरम दिढ लागै, सो संवेग जजौं भव भागै।।
ॐ ह्रीं पवनकायदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।८।।

(अडिल्ल छन्द)

छेदन भेदन ताडन मरदन दुख घनै,
और महादुख जान जाय ते किम गिनै।
वनस्पति दुख जोय पाप भय चित धरै,
सो संवेगता भाव जजौं भव भ्रम हरै।।
ॐ ह्रीं वनस्पतिकायदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।९।।

एक सांस के मांहि अठारैवर मरै,
फेर काल उस मांहि अठारै तन धरैं।
ऐसी वेदन लख निगोदके मांहिजी,
ह्वै भयभीत सु जजौं संवेग जु ठांहि जी।
ॐ ह्रीं निगोददुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१०।।

बे-इन्द्री लट जौंक गिंडोला अलसिया,
बाला कौडी संख आदि दुखमें सिया।
इनकी वेदन देख चित्त भय लाय है,
सो संवेग जजौं लख अघ थर्राय है॥

ॐ ह्रीं द्वि-इन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥११॥

चींटी खटमल धान तिजूंला जानिये,
और कुंथवा आदि ति-इन्द्री मानिये।
या गति वेदन जोय पाप तज वृष धरै,
सो संवेगता जजौं जगत भय थरहरै॥

ॐ ह्रीं त्रय-इन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१२॥

माखी मच्छर भ्रमर और टीडी सही,
डांस पतंगा आदि जीव चव-अख कही।
इन तन वेदन जोय पाप भय लाय है,
सो संवेगता भाव जजौं वृषदाय है॥

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१३॥

हाथी घोडा देव मनुज नारक सही,
सिंह सूर मृग आदि और पंच अख कही।
ताकी उत्पत्ति मृत्यु देखि भय लाय है,
सो संवेग जजौं वृष धरि हरषाय है॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१४॥

जनम रोग दुख करै मात उर इमि सहै,
तल सिर ऊपर पांव लिपत मलतैं।
इत्यादिक दुख जनम जान विरकत सही,
सो पूजौं संवेग भाव शिवदा मही॥

ॐ ह्रीं जन्मदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१५॥

बिच्छू लाखों डसै जिसा दुख मरण का,
इनैं आदि दुख और कालवश परनका।
मरन महादुख जान जीव विरकत सही,
सौ पूजों संवेग भाव शिवदा मही॥

ॐ ह्रीं मरणदुःखविरक्त-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१६॥

(गीता छन्द)

इष्ट वस्तु वियोग का दुख जगत में भरपूर है,
धन पुत्र नारि पितादि सज्जन मरणवार हुं दूर है।
इन आदि इष्ट पदार्थ विनसै, देख जो विरकत सही,
सो पूजि हौं संवेग भावन ताहिमें यह दुख नहीं॥

ॐ ह्रीं इष्टवस्तुवियोगदुःखरहित-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१७॥

जो मिलै बैरी सिंह सूर अरु, जीव दुष्ट अनेकजी,
यह है अनिष्ट संजोगका दुख, कहे तिनको टेकजी।
इन आदि कारण और दुखको, जानिकै विरकत भये,
सो जजौं भाव संवेग मन वच, तास फल बहु शिव गये॥

ॐ ह्रीं अनिष्टवस्तुसंयोगदुःखरहित-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१८॥

तन रोग पीडा होय बहुती, कंठ तन शस्तर लगै,
पित सांस खांस जलोदरा तन, आयके पीड़ा जगै।
इन आदि पीड़ा मिलनके दुख, जानके विरकत भए,
सो जजौं भाव संवेग मन वच, तास फल बहु शिव गये॥

ॐ ह्रीं पीडासंयोगदुखरहित-संवेगभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१९॥

इन आदि कारण और दुखके, जगतमें पूरण सही,
तिस सहित चउ गति जीव भरिए, देखिये सबही मही।

इन जानि विरचे जगत सेती, धर्ममें अति दिढ भये,
सो जजौं भाव संवेग मन वच, तास फल बहु शिव गये॥

ॐ ह्रीं अनेकदु:खमयजगतअवलोकनरहित-संवेगभावनायै महार्घ्यं नि० ॥२०॥

जयमाला

(दोहा)

अथिर दशा संसार की, देख जु भए उदास।
भये मगन निजरूपमें, ते निज गुण के दास॥१॥

(बेसरी छन्द)

जग लख चपल भाव वैरागै, तब आतमरस मांही लागै।
भव में जानै दुःख अपारा, सो संवेग भाव जग न्यारा॥२॥

मात तात सुत सज्जन भाई, नारी आदि और सुखदाई।
ए सब स्वारथके लख सारा, धर संवेग भाव जग न्यारा॥३॥

तन धन राज लक्ष्मि क्षयकारी, बिजली जिसी चपल हैं सारी।
राखी रहै न इक छिन प्यारा, धर संवेग भाव भव न्यारा॥४॥

देव इन्द्र के सुख नश जावै, खग-चक्रीपद देखत ढावै।
इम लखि जगत महा दुखकारा, धर संवेग भाव भव न्यारा॥५॥

काल अनादि जगत भरमाये, नाना तन धरि अति अकुलाये।
लखा न सुख सब दुखका भारा, धर संवेग भाव भव न्यारा॥६॥

पाप किए जिय नरक सिधायो, कै तिर्यञ्च विषै दुख पायो।
अब औसर नीका है प्यारा, धर संवेग भाव भव न्यारा॥७॥

पुण्य उदय नर देव बनाया, तहँ मनवांछित बहु सुख पाया।
सो भी भए देख क्षयकारा, धर संवेग भाव भय न्यारा॥८॥

कौन महा दुख जग के भाखै, यह जिय, इन्द्री सुख अभिलाखै।
तातैं तजो मान क्षयकारा, धर संवेग भाव भव न्यारा॥९॥

(सोरठा)

जग दुख रूप विचार, विरचे भवतैं साधवा।
जग सुख छिन्हु न धार, सो पूजों संवेगता।।१०।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

६. त्यागभावना-पूजा

(सोरठा)

त्याग भावना सार, भवदधि नौका जानिये।
इम लखि मन वच धार, थापन कर पूजौं सही।।

ॐ ह्रीं त्यागभावना ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं त्यागभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं त्यागभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(पद्धडी छन्द)

जल कनक झारि धरि भाव लाय, महा उज्ज्वल क्षीर समुद्र भाय।
पूजौं सु त्याग भावन महान, ताके फल जनम जरा न जान।।

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन घसि निरमल नीर लाय, धरि कनक पात्रमें भक्ति भाय।
पूजौं सु त्याग भावन महान, ताके फल भव तप नाहिं जान।।

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत मुक्ताफल से बखान, बिन खंड गंध उज्ज्वल महान।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ता फल अखंड पद होय आय।।

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पुष्प कल्पवृक्ष गंध वर्ण धार, तिनकी करि माला भक्ति सार।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल काम न जोर पाय।।

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

षट् रस नैवेद्य बनाय सार, धरि सुभग पात्र में हरष धार।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताफल क्षुध्या गद तुरत जाय॥
ॐ ह्रीं त्यागभावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीपक मणिमय अति जोतिरूप, धरि थाल आरती कर अनूप।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल मिथ्या तम नसाय॥
ॐ ह्रीं त्यागभावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

कर धूप अगर चंदन सुगंध, वह्नि पर खेऊं भक्ति बंध।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल क्षय हो कर्म जाय॥
ॐ ह्रीं त्यागभावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

श्रीफल बिदाम खारक अनूप, पुंगीफल आदिक लेय रूप।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पावै मोक्ष ठाय॥
ॐ ह्रीं त्यागभावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत पुष्प सार, चरु दीप धूप फल अर्घ धार।
पूजौं सु त्याग भावन सुभाय, ताके फल पदवी सुभग पाय॥
ॐ ह्रीं त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

आप समान सकल जिय जान, अभयदान दे सबको मान।
दया भाव राखैं मनमांहि, अभयदान सो भाव जजाहिं॥
ॐ ह्रीं अदयात्याग-अभयदान-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

सबको हितदा ज्ञान विचार, दे श्रुतज्ञान महाबुध धार।
सबको चाहै केवलज्ञान, सो ही ज्ञानदान हितवान॥
ॐ ह्रीं शास्त्रदान-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

भोजन देय कायथित काज, मुनि कूं भक्ति दया सुखपाज।
यथायोग्य जे दान कराय, सो अन्नदान सकल सुखदाय।।

ॐ ह्रीं अन्नदान-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

रोगी को शुभ भेषज देय, सब जिय साता वंछै तेय।
औषधदान तास को नाम, सो भी देनो शिवपुर काम।।

ॐ ह्रीं औषधदान-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

एही दान चार विधि जान, त्यागभावनामें पहिचान।
तीर्थङ्कर पद दाय बताय, सुरतरु-सी जिनवाणी गाय।।

ॐ ह्रीं चार प्रकार दान-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

करुणासागर दीनदयाल, सब जीवन के हैं प्रतिपाल।
त्याग जीवकी घात सयान, सो व्रत जजौं अरघतैं आन।।

ॐ ह्रीं हिंसात्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

जीव जाय तो झूठ न कहै, महा धीर सतवादी रहै।
सत्य वचन सब धर्म समान, सो व्रत जजौं अरघतैं आन।।

ॐ ह्रीं असत्यत्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

परधन ताहि महा अघ जान, छूवै नहीं दया को खान।
चोरी त्याग होय गुणथान, सो व्रत जजौं अरघतैं आन।।

ॐ ह्रीं चोरीत्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

नारी चार जातिकी सोय, देव मनुषनी आदिक होय।
सो सब मन वच त्यागी जान, सो व्रत जजौं अरघतैं आन।।

ॐ ह्रीं कुशीलत्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

परिग्रह त्याग करै जिय सोय, ताके शिव की वांछा होय।
पापकार आरम्भ पिछान, सो व्रत जजौं अरघतैं आन।।

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

तनतैं ममता भाव निवार, शिवके हेत नगन पद धार।
सहें परीषह खेद न आय, तनविरक्तके पूजौं पाय॥

ॐ ह्रीं तनममत्व-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥११॥

भोग संपदा सकल निवारि, सहस छानवैं सुरसी नारि।
सब तजि मोक्ष भावना भाय, सो त्यागी पूजौं मन लाय॥

ॐ ह्रीं राजभोग-त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

इत्यादिक त्यागी जे होय, शिव वांछक जिय रक्षक सोय।
भव त्यागी रागी निर्वाण, सो मैं जजौं त्याग भव हान॥

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१३॥

जयमाला

(सोरठा)

त्याग मोक्ष मग लोय, जगत पूज्य त्यागी सही।
बिना त्याग भव होय, तातैं त्याग जजौं सही॥१॥

(मुनियनानन्द की चाल)

त्याग भावन बिना मोक्ष जीवन नहीं,
त्याग ही मोक्षमग जान सब श्रुत कही।
त्याग मोह हरनको महाभट जानिये,
त्याग ही मूल समता तनो ठानिये॥२॥

त्याग ही कर्मगिरि वज्र सम है सही,
त्याग मन विकलता रोकने पटु कही।
त्याग शिववास को जान मन लाइये,
त्याग केवल थकी कर्म दव जालिये॥३॥

त्याग मुनिराजका भला भूषण सही,
त्याग को नमैं सुरखगा चक्री मही।

पूजि हैं त्याग को इन्द्र थुति लायजी,
मैं जजौं त्याग मन वचन तन आयजी।।४।।
त्याग बिन राग ही कर सके सोहनो,
रागजुत जीवको हार भागे मनो।
त्याग कल्पवृक्ष सम देय वांछित सही,
त्याग इम जानि मैं जजौं सिर दे मही।।५।।
त्याग त्रिभुवन विषैं सार धर्म अंग है,
त्यागके जोर तैं होय कर्म भंग है।
त्यागको देख कायर नरा धूजि हैं,
त्यागको मैं जजौं और भवि पूजि हैं।।६।।
त्याग फल उदयतैं होय हैं आयजी,
इन्द्र वा देव खग चक्रधर थायजी।
मोक्ष ताही भवैं तथा कर्मतैं लहै,
मैं जजौं त्याग भवि जजौं जिनधुनि कहै।।७।।
त्याग जग पूज्य है त्यागधर पूज्यजी,
त्यागतैं अवधि मनपर्ज सब सूझजी।
त्याग तारै समुद जगत अति दुद्धरा,
मैं जजौं त्यागको और पूजौं नरा।।८।।
त्याग खोटे किए कर्म को झट हरै,
त्यागतैं सुभट मन और इन्द्री मरै।
त्याग ही मरणका भय निवारै सही,
मैं जजौं त्यागको मन वचन तन कही।।९।।

(दोहा)

त्याग तरन तारन सही, त्याग जगत गुरु सोय।
मैं पूजों मन वचन तन, त्याग भावना जोय।।१०।।

ॐ ह्रीं त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

७. तपभावना-पूजा

(अडिल्ल)

तप ही वज्रसमान पापगिरि को सही,
तप ही भवदधि नाव धरै शिव की मही।
तप ही भव भव शरण हरो, भव दुख सबै,
सो तप मैं इहां थापि जजौं मन वच अबैं।

ॐ ह्रीं तपभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं तपभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं तपभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(गीता छन्द)

पदमद्रह को नीर निरमल, कनकझारीमें धरौं,
उर भक्ति करि गुण गाय तपके, शीशतैं नमनी करौं।
इह भली भावन तप सु केरी, कौन उपमा गाय है,
मैं जजौं तप मन वचन काया, तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं तपभावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

घसि अगर चन्दन नीर सेती, महागंधका भारजी,
हौं कनकझारी मांहि धरिहौं, नमौं तपगुन धारजी।
ता फलै भवकाताप नाशै, होय समता भाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं तपभावनायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत अखंडित धवल नखसिख, शुद्ध गंध मई कहै,
धरि सुभग पातर भावनातैं, आपने करमें लहै।
पद अक्षय पावन चाह मेरे, तास यों मन भाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है॥

ॐ ह्रीं तपभावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

फूल चांदी कनकका करि, तथा सुरतरु के सही,
करि माल नीकी शोभदाई, भ्रमर गुंजत गंध मही।
तिस देख कंपै मदन को उर, यह चढी जिनपायजी।
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दायजी।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नैवेद्य षट रस सार मोदक तुरत के बनवायजी,
तिस देख उर अनुराग उपजै, क्षुधारोग नसायजी।
तब होय निर्वांछक स्थिर हो, ध्यानमें थिर थाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

करि दीप मणिमय नाश तमको, कनक थालीमें धरों,
कर आरती शुध भाव सेती भक्ति बहु मनमें करौं।
ता फलै तुरत अज्ञान जावै, ज्ञान परगट थाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप दशधा गंध धारी, अगनिमधि जारौं सही,
उर हरष करले आप करमें, कर्मरिपु मारो सही।
तब होय शिव पद कर्म नाशै, तास यह विधि पाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

ले लौंग खारक और श्रीफल, जान सुभग बदामजी,
फिर जान पिस्ता आदिनीका, भला फल अभिरामजी।
ता फलै शिवफल होय निश्चल, और बहु कहाँ गाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल गंध अक्षत फूल चरु ले, दीप धूप फला सही,
कर अर्घ आठों द्रव्य मिलकै महा शुभ फल की मही।
ता फलै अद्भुत होय फल सो, कौन मुखतैं गाय है,
मैं जजौं तप शुध भावनाको तीर्थपदकी दाय है।।

ॐ ह्रीं तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

प्रत्येक अर्घ

(सोरठा)

जो कर हैं उपवास, एक दोय पक्ष मासके।
सो अनशन तप नाम, मैं पूजों द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं अनशनतपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

भूख थकी लघु खाय, अर्घ तथा दोय ग्रासजी।
सो ऊनोदर भाय, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं ऊनोदरतपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

रोज वस्तु परमान, राख लेय दिढ भावतैं।
सो व्रतसंख्या जान, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं व्रत-परिसंख्यान-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

रोज रसनको त्याग, षट रस वा दो एक जी।
रसपरित्याग व्रत लाग, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

आसनादि दिढ भाव, नांहि चलै खग देवतैं।
सो शय्यासन चाव, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

निमित कष्ट को आय, समता भावन जो रहै।
कायकलेश सु भाय, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं कायक्लेश-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

ए तप बाह्य बखान, जगत पूज्य फल दे सही।
महा ऊंच गुन जान, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं बाह्य षट्-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

लगे दोष शुध होय, जानै सो गुरु दे सही।
सो प्रायश्चित जोय, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

विनय करै गुरु देव, धरम तथा धरमी तनौं।
सो तप विनय स्वमेव, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं विनय-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

मुनि के चंपै पांव, जो तन में तप खेद हो।
सो वैयावृत भाय, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्य-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१०।।

निशदिन जिनधुनि पाठ, पूछै सुनि चिंतवन करै।
सो स्वाध्याय तप ठाठ, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

तनतैं ममत निवार, इक थल तिष्ठै धीरसौं।
सो व्युत्सर्ग तपसार, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

मन वच तन इक ठाम, चिंतैं धर्म शुध भावना।
ध्यान तिको शुभ नाम, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं।।

ॐ ह्रीं ध्यान-तपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

ए तप द्वादश जान, दुविधि महा अघके हरा।
कर्मगिरि वज्र समान, मैं पूजौं द्रव्य आठतैं॥

ॐ ह्रीं द्वादशतपभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१४॥

जयमाला

(बेसरी छन्द)

जो तप करै हरै अघ सारा, होय सकल करमनतैं न्यारा।
ए तप परभवके संग साथी, ए तप करम दलनको हाथी॥१॥

तप ही भवदधि नाव बताया, तप बलतैं सबने शिव पाया।
तपकी अग्नि दहै कर्म काठा, तपतैं रहे नहीं अरि आठा॥२॥

तपकी चाह करे सुरपति-से, तपकूं राज तजै नरपति-से।
तप को जजै तिको तप पावै, तप बिन प्राणी जगत भ्रमावै॥३॥

तप दे कल्पवृक्ष मन चाया, तप आगममें बन्धु बताया।
तपतैं तपैं कांतिको पावै, कनक जिसै वह्नी संग थावै॥४॥

तपको चहै तितो भर प्रानी, तपको करै तिनै धुनि जानी।
तपको पूजै सो तप चेरा, तप धारै सो साहिब मेरा॥५॥

मैं तो तपकी सेव कराऊं, कब तप मिलै भावना भाऊं।
जबलौं मिलै नहीं तप त्राता, तबलौं मैं तप पूजौं भ्राता॥६॥

तपका शरण भवांतर पाऊं, तपको भव भव में सिर नाऊं।
तप ही तैं गुरु देव कहावै, तप जगबंधु सकल सुख पावै॥७॥

(दोहा)

तरुणपनैं तप जे धरै, तिरै नेम जिन जेम।
तातैं मैं तपकौं नमौं, वसु द्रव ले धर प्रेम॥८॥

ॐ ह्रीं तपभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❁ ❁ ❁

८. साधुसमाधिभावना-पूजा

(दोहा)

जाविधि मुनिको सुख बढै, साधु समाधि सुजान।
सो मैं इत थापन करौं, पूजौं मन वच आन॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(चोपाई)

नीर नीरमलो गंगातनौं, सो मैं कनकझारी ले घनौ।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल मिटै कर्मको दाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै जलं नि० ॥१॥

बावन चन्दन नीर घसाय, रतन जड़ित झारी धरलाय।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल भव आताप नशाय॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै चन्दनं नि० ॥२॥

अक्षत उज्वल मोती समा, सुभग रकेबीमें धर रमा।
पूजौं साधु समाधिभाव, ताके फल अक्षयपद पाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अक्षतान् नि० ॥३॥

फूल भले सुरतरुके लाय, गूंथी माल भक्ति मन लाय।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल मदन नाशको पाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै पुष्पं नि० ॥४॥

बहु विध रस नैवेद्य बनाय, उज्वल पातर ले हरषाय।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल भूख नाशको पाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नैवेद्यं नि० ॥५॥

दीपक मणिमय थाल भराय, मन वच तन करि भक्ति बढाय।
पूजौं साधु समाधिभाव, ताफल नाशै मिथ्या दाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै दीपं नि० ॥६॥

धूप जु दस विधि गंध मिलाय, अग्नि विषैं खेऊं मन भाय।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल अष्ट कर्म क्षय जाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै धूपं नि० ॥७॥

श्रीफल लौंग बिदाम अपार, खारक आदि और फल सार।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल सिद्ध थान फल पाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै फलं नि० ॥८॥

जल चन्दन अक्षत पुष्प लेय, चरु दीप धूप फल जेय।
पूजौं साधुसमाधिभाव, ताफल अद्‌भुत फल उपजाव॥

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

प्रत्येक अर्घ्य

(चौपाई)

मूलगुणोमें जो अतिचार, लागै जाहि जतीको सार।
सो पुलाक मुनि साता लाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय॥

ॐ ह्रीं पुलाकमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१॥

भोजन मांहिं कछु रति लहै, बकुश जाति सो मुनिवर कहै।
तिनको साता विधि मन लाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय॥

ॐ ह्रीं बकुशमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

मुनि कुशील कहे जुग भेद, इक कषाय प्रतिसेवन वेद।
तिनको साता विधि मन लाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय॥

ॐ ह्रीं कुशीलमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ॥३॥

उत्तर गुणमें कछु अतिचार, सो प्रतिसेवन साधु विचार।
तिनको साता विधि मनलाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय।।

ॐ ह्रीं प्रतिसेवना-कुशीलमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४।।

दशमें गुणथानक लौं सही, तबलौं मोह उदय अस कही।
सो कषाय कुशील मुनिराय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय।।

ॐ ह्रीं कषायकुशीलमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५।।

जा मुनि मोहकरम न पाय, यथाख्यातचारित्र कहाय।
सो निरग्रंथ जती मन लाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६।।

जो जिन मुनिको केवल होय, साधु स्नातक कहिये सोय।
तीन लोक पूजन मन भाय, साधुसमाधि जजौं सुखदाय।।

ॐ ह्रीं स्नातकमुनि-साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं नि० ।।७।।

ये पांचों मुनि हैं शिव नाय, सबही नगन जानकर ध्याय।
शिवनायक दायक शिवभाव, साधुसमाधि जजौं सुखदाय।।

ॐ ह्रीं पंच प्रकार मुनि-साधुसमाधिभावनायै महार्घ्यं नि० ।।८।।

जयमाला

(मुनयनानन्दकी चाल)

भावना साधुसमाधि सो जानिये,
जती तन विषैं सुख होय जिम ठानिये।
रोग वश मुनि मन नांहि थिर होयजी,
रोगविधि नाशऋषि ध्यान शुद जोयजी।।१।।

देव खग नर पशु दुष्ट जो दुख करै,
ताहि जो दूर कर मुनिको सुख भरै।
जती समभाव शिवसाधना लाय है,
साधुसमाधि सो भावना भाय है।।२।।

साधुकी भक्ति शिव शाश्वती देयजी,
साधुको सुख करै मोक्ष ते लेयजी।
साधु साता हरै जगत फेरा सही,
साधुकी भक्ति शुद्ध ठामकी है मही।।३।।

साधुको सुख बधै काज सो कीजिये,
साधुकी सेवतै सासते जीजिये।
मैं सदा साधुकी भक्ति चाहौं सही,
होय मोकौं शरण आगले भव मही।४।

साधुको सुख करै तिको निज अघ हरै,
साधुकी विनयजुत वंदना नित करे।
साधुसमाधि सो भावना जानिये,
तास फल तीर्थपद करमको हानिये।५।

(दोहा)

साधुसमाधि भावको, जो भावे भवि कोय।
जो साधुको सुख करै, सो तीर्थंकर होय।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै पूणार्यं नि० ।।८।।

६. वैयावृत्यभावना-पूजा

(गीता छन्द)

मुनिराजको मग चलत तनमें खेद जब उपजै सही,
वा घने तपके जोर सेती, काय कछु खीनी भई।
ता समय दाबै पांव सिर कर भाव या विधि जो करै,
सो जान वैयावृत्य पूजौं, थाप इहां सो अघ हरै।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(नाराच छन्द)

निरमलौ सुनीर लाय कनकझारिका धरौं,
अति सुगंध खीरसागर तास मांहि ए करौं।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदी को उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै जलं नि० ।।१।।

नीर मांहि बावनौ सुचन्दना घसाय हौं,
झरौं सु कनकझारिका महा सुभक्ति भाय हौं।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै चन्दनं नि० ।।२।।

अक्षता अखंड़ खंड़ नाहिं उज्वला सही,
महा सुगन्ध सोहना सुभक्ति भला ज्यौं कही।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै अक्षतान् नि० ।।३।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भले सुफूल गंधधार देवद्रुमके सही,
करी सु माल पोय गूंथ भाव भक्त ले ठही।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै पुष्पं नि० ।।४।।

लिये भले सुमोदकादि तुरतके किये सही,
धरै जु पात्रमांहि भाव भक्ति ले हिये मही।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीपका बनाय रत्न अंधके विनाशिया,
भले सुपात्र मांहि धार ज्ञानका विकासिया।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै दीपं नि० ।।६।।

लई जु धूप गंध सार भ्रमरकी भ्रमावनी,
सुखेय वह्नि मांहि ताहि भावकी बधावनी।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै धूपं नि० ।।७।।

श्रीफला बदाम लौंग आदि जे फला सही,
धरै जु पात्र मांहि भक्त भावना हिए कही।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै फलं नि० ।।८।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

जला सु गंध अक्षता भले जु पुष्प जानिये,
चरु सु दीप धूप फला अर्घ ले आनिये।
जजौं सुभाव वैयावृत्य भावना सुभाय है,
फलैं सु तास लहै तीर्थपदीको उमाय है।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।९।।

प्रत्येक अर्घ

(चोपाई)

गुण छतीस के धारक सोय, संघनाथ आचारज होय।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय।।

ॐ ह्रीं आचार्यवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।१।।

गुण पचीसके धारनहार, उपाध्याय भवतारन सार।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।२।।

तपस्या बहुविधि दुद्धर करै, तपसी जात मुनितैं अघ हरै।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय।।

ॐ ह्रीं तपस्वीजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।३।।

आचारज पै पढै सुज्ञान, सो शैक्ष्य जाति मुनि पहचान।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय।।

ॐ ह्रीं शैक्ष्यजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।४।।

रोग सहित तन समता भाव, सो गिलान मुनि भवदधि नाव।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फल दाय।।

ॐ ह्रीं ग्लानजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।५।।

वय करि बड़े तथा गुण चढ़े, इनका संग जे मुनि गण दडे।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय।।

ॐ ह्रीं गणजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ।।६।।

दिक्षा देन विधि जानै जोय, ते कुल जाति मुनि सबलोय।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय॥

ॐ ह्रीं कुलजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ॥७॥

मुनि अर्जिका श्रावक श्राविका, इनको संघ कहिए अघ थका।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय॥

ॐ ह्रीं चार प्रकार-संघवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ॥८॥

बहुत दिनों के दीक्षित होय, साधु जाति मुनि कहिये सोय।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय॥

ॐ ह्रीं साधुजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

दिक्षा लेनको सनमुख भया, सो मनोज्ञ कुल पावन थया।
इनको वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फल दाय॥

ॐ ह्रीं मनोज्ञजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ॥१०॥

ए दस जाति मुनि भवतार, इनकी सेव करै भवपार।
जो इन वैयावृत मनलाय, सो तीर्थङ्करपद फलदाय॥

ॐ ह्रीं दसजाति-मुनिवैयावृत्यभावनायै अर्घ्यं नि० ॥११॥

जयमाला

(दोहा)

वैयावृत सब व्रतन में, बडो वरत मन लाय।
याकी सेवा जो करै, सो शिव पहुंचै जाय॥१॥

(बेसरी छन्द)

वैयावृत है धरमका मूला, वैयावृततैं अघ खय थूला।
वैयावृत किजै गुरु केरा, तातैं मिटे जगतका फेरा॥२॥

वैयावृत महा गुण प्यारा, वैयावृत भवदधिका तारा।
वैयावृत धर्म अंगका डेरा, यातै मिटे जगतका फेरा॥३॥

वैयावृत धर्मबीज बताया, वैयावृत जगबन्धू गाया।
वैयावृत-सा धन नहिं नेरा, तातै मिटे जगतका फेरा।।४।।

वैयावृत आभूषण ताकै, जा सम शोभा और न काके।
वैयावृत दुख-वह्नी नीरा, तातै मिटै जगतकी पीरा।।५।।

वैयावृत जाके उर भावै, सो जिय सज्जन सब मन आवै।
वैयावृत सब दोष विनासी, या फल होय जगत-लछि दासी।६।

वैयावृततैं वैर नसावै, वैयावृत जग हेत बढावै।
वैयावृत को जो भवि पासी, ताफल होय जगत-लछि दासी।७।

वैयावृत जाके मनमांहीं, सो जग पूज्य कह्यो जग ठांही।
वैयावृतको मैं सिर नाऊं, ताके फल जगमें न भ्रमाऊं।८।

वैयावृत सब धर्म निशाना, वैयावृततैं होय सुध्याना।
ताफल लहै हियेमें ज्ञाना, तातैं वैयावृत परधाना।।९।।

वैयावृत तपमें परधाना, वैयावृततैं भवदधि हाना।
वैयावृत शिवराह बतावै, वैयावृतको जग जस गावै।।१०।।

वैयावृत छिनक अघ मारा, वैयावृत संतनको प्यारा।
वैयावृत सा और न मिंता, वैयावृत मेटे भव चिंता।।११।।

(दोहा)

वैयावृत में गुन घने, कबलौं कहों बनाय।
तातैं मुनि तन टहलको, करो सु मन वच काय।१२।

ॐ ह्रीं वैयावृतभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

१०. अरहंतभक्तिभावना-पूजा

(अडिल्ल)

प्रतिहार्य वसु अनन्त चतुष्टय जानिये,
दस जन्मत, दस केवल उपजत मानिये।
चौदह देवा करै सकल छ्यालीस गुन,
इन जुत अरहंत जजौं थापि इहाँ शुद्ध मन।।

ॐ ह्रीं अरहंतभक्तिभावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं अरहंतभक्तिभावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं अरहंतभक्तिभावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(चौपाई)

पदमकुण्डको निरमल नीर, कनक झारिका धरि मन धीर।
पूजौं मन वच भक्ति लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन बावन नीर घसाय, रतन जड़ित झारि भर लाय।
पूजौं मन वच भक्ति लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत उज्ज्वल खण्ड न कोय, कनक थालमें धर शुध होय।
पूजौं मन वच भक्ति लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

देवद्रुमके फूल सुलाय, माला कर सेवौं जिन पाय।
पूजौं मन वच काय लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नाना रस नैवेद्य करेय, मोदक आदि सुभग कर लेय।
पूजौं मन वच काय लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

दीपक रतन मई कर लिया, सुभग थाल भर सनमुख भया।
पूजौं मन वच काय लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप दशांग बनाय सु प्यार, वह्निमध्य जारौं मनधार।
पूजौं मन वच काय लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल लौंग बदाम अपार, खारक पुंगीफल ले सार।
पूजौं मन वच काय लगाय, अर्हन्तभक्ति-भावना भाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल चंदन अक्षत पुष्प लेय, चरु दीपक सु धूप फल लेय।
अर्घ बनाय शीश को नाय, पूजौं अरहन्तभक्ति सुभाय।।

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

प्रत्येक अर्घ

(अडिल्ल छन्द)

वृक्ष अशोक सुजान ताहि देखै सही,
रहै नहीं उर शोक होय उर सुख कही।
याके धारी अरहन्त देव महान है,
पूजौं अरहंत भक्ति भाव गुनथान हैं।।१।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

देव पहुपकी वृष्टि करैं थुति लायकै,
नभतैं आवै जेम रतनसे भायकै।
मानों जोतिष जान भूमि पै आय है,
इन जुत देव नमों सु भावना भाय है।।२।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

खिरे दिव्यधुनि सार सु जिनवरकी सही,
प्रातिहार्य यह जान सकल जिय रक्ष मही।
या जुत अरहंत देव भक्ति शुभ भावना,
मैं पूजौं थुति आन अरघ धर पावना।।३।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

उज्वल जिम गंगाधार रतनमय सारजी,
चंवर सु ढौरै देव भक्तिके लारजी।
प्रातिहार्य यह इन जुत अर्हन्त देवजी।
ताकी भक्ति सुभावन करिहौं सेवजी।।४।।

ॐ ह्रीं चमरप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

सिंहासन जिम मेरु रतन कनकै जड्या,
प्रातिहार्य जगपूज्य किन्हीं सह ना घड्या।
इनके धारक देव कहै अरहंत जी,
तिनकी भक्ति सुभावन शिवका पंथजी।।५।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जिनके तनकी जोति चक्र ताकी सही,
ताके देखै लखै पूर्वभवकी मही।
प्रातिहार्य यह इन जुत अरहन्तदेवजी,
ताकी भक्ति सुभावन करिहौं सेवजी।।६।।

ॐ ह्रीं प्रभामंडलप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

देव बजावै नभमें बहुविधि बाजना,
तिनकी धुनि चहुं ओर महा अघकी हना।
प्रातिहार्य इन सहित देव अर्हन्त सही,
इनकी भक्ति सुभावन पूजौं शुभ मही।।७।।

ॐ ह्रीं दुंदुभिप्रातिहार्यसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

छत्र तीन सिर धरै जगतत्रय नाथजी,
प्रातिहार्य जुत भले विराजै तातजी।
जगत देव अरहन्त सुगुणके धार हैं,
ताकी भक्ति सुभावन पूजौं सार है॥८॥

ॐ ह्रीं तीन छत्र प्रातिहार्य सहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

धरै अनन्तो ज्ञान लखै सब जग तनी,
तीन काल की कथा सकल जो जो बनी।
या अतिशय जुत देव जान अरहन्तजी,
तिनकी भक्ति सुभावन सेवन संतजी॥९॥

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

देखै जो त्रयकाल पदारथ सकल ही,
तिनतैं छानी नाहिं सकल सुखकी मही।
या गुण धारक देव कहे अरहन्तजी,
तिनकी भक्ति सुभावन सेवत संतजी॥१०॥

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

सुख अनन्तके धार जगत गुरु सार जी,
अविनाशी दुख नाहिं भवोदधि पारजी।
या गुण अतिशय धार देव अरहन्तजी,
याकी भक्ति सुभावन सेवत संतजी॥११॥

ॐ ह्रीं अनन्तसुखसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

बल अनन्तके धार देव अरहन्तजी,
यह अतिशय इन माहिं और नहिं अन्तजी,
इनकी भक्ति सुभावन सुखकी दाय है,
सो जन तीरथपदको निहचै पाय है॥१२॥

ॐ ह्रीं अनन्तबलसहित-अरहन्तभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

(गीता छन्द)

इन आदि अतिशय और सुखदा लहै तिनमें सारजी,
सो देव हैं अरहन्त जग में भविकजन के तारजी।
इन भक्ति भावन जो करै जिय लहै जगथुति को मही,
अरहन्तभक्ति सुभाव भावै ते लहैं शिवको सही॥

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनायै महार्घ्यं नि०।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

अरहन्तभक्ति भाव जो भावै, सो उत्कृष्टे पद को पावै।
अरहन्त सो तामैं गुण एहा, देव जजैं बहु कर कर नेहा॥१॥

जनमत जो दस अतिशय पावै, सुगुन सु हरिसुर वांछित भावै।
दस अतिशय पावै तब देवा, केवलज्ञान होय स्वयमेवा॥२॥

चौदह अतिशय देव करावै, तिनकी महिमा मुख किम गावै।
आठ प्रातिहारज फिर होई, ए गुण प्रभु बिन लहै न कोई॥३॥

अनन्त चतुष्टय मंगलकारी, सो गुण भी जिनके आधारी।
सब गुण मिल छ्यालीस धरैया, सो अरहंत देव जज भैया॥४॥

या जिन सेव सकल अघ टारै, जिनकी सेव भवोदधि तारै।
अरहंतसेव बिना सुख नाहीं, मोक्ष मिलै नहिं जिनथुति पाही॥५॥

या प्रभु की सेवा मैं चाहूं, जिन थुति कर भव सफल कराहूं।
जो मन वंछा है यह भाई, अरहंत भक्ति मिलै सुखदाई॥६॥

जबलौं मोकूं मोक्ष न होई, तुम थुति चहूं और नहिं कोई।
तातैं अरज यह है अरहंता, आप भजन काटै मोहि तंता॥७॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

(दोहा)

अरहंत इन गुण धार जो, भाव भक्ति इन भाय।
ताफल जिनपद पाय है, सो मैं पूजूं आय॥८॥

ॐ ह्रीं अरहन्तभक्ति-भावनार्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

❁ ❁ ❁

११. आचार्यभक्तिभावना-पूजा

(चाल जोगीरासा)

द्वादश तप धर्म दस विधि गाये षडावश्य शुद्ध भाई,
पंचचारज तीन गुप्ति मिल गुण छत्तीस कहाई।
इनके धारक आचारज सोई इनकी भक्ति सुभावा,
सो इहां थाप जजौं मन वच तन मेटन भवका दावा॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(चौपाई)

नीर पदम कुण्डको ले सार, मणिमय झारीतैं करधार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं मन वच तन होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा॥१॥

चंदन अगन नीर घस लाय, शुभ पातरमें धर उमगाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, मैं पूजौं भवतप क्षय होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥२॥

अक्षत उज्ज्वल मोती जेम, सो मैं लेय धार कर प्रेम।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, मैं पूजौं अक्षय फल होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥३॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

पुष्प सुगन्ध वरण अधिकाय, कल्पवृक्षके ले हरषाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं मन्मथ क्षय होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥४॥

षट्रस कर नैवेद्य कराय, मोदक आदि महा शुभ भाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं रोग क्षुधा क्षय होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

दीप रतनमय ज्योति जगाय, कर्पूरादिक बहु विधि लाय।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं मिथ्यातम खोय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥६॥

दसधा धूप मिलाय सुगन्ध, अगनि माहिं खेऊं अघ बंध।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं वसु कर्म क्षय होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥७॥

श्रीफल लौंग बदाम अपार, खारक पुंगीफल सुखकार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं शिवफल जिम होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा॥८॥

जल चंदन अक्षत पुष्पसार, चरु दीपक फल धूप सुप्यार।
आचार्यभक्ति-भावना सोय, पूजौं मैं अघ नाशै होय॥

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

तप द्वादश दो विधि मन लाय, अन्तर बाहिर भेद बनाय।
इनको धरै अचारज सोय, ते गुरु जजौं अरघतैं जोय॥१॥

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०॥

इक उपवास मास पक्ष जान, वर्ष आदि उपवास बखान।
इनको करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।२।
ॐ ह्रीं अनशनतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

भूख थकी लघु खावै सही, अवमौदर्य नाम तप यही।
इनको करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।३।
ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

नितप्रति वरत करै परमान, सो व्रतसंख्या तप अघ हान।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।४।
ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

रोज रसनको त्यागै सही, रसपरित्याग नाम तप यही।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।५।
ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

दिढ़ आसन लखकै थित करा, विविक्त शय्यासन तप धरा।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।६।
ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तनको कष्ट करै सम रहै, कायकलेश नाम तप यहै।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।७।
ॐ ह्रीं कायक्लेशतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

ए षट् बाह्य तनैं तप जान, पापबेल हर करवत मान।
इनको करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।८।
ॐ ह्रीं बाह्य षट्तपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

लगे दोषको जो सुध करै, सो प्राच्छित-तप अघ-बन हरै।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।९।
ॐ ह्रीं प्रायश्चिततपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

आप थकी गुरुका सत्कार, सोही विनय नाम तप सार।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।१०।
ॐ ह्रीं विनयतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

मुनि के खेद निवारन काज, हाथ पाँव चंपे बुध साज।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।११।
ॐ ह्रीं वैयावृत्यतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

निशदिन जिनवानी अभ्यास, सो स्वाध्याय महा तप वास।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।१२।
ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

काय ममत परिहार कराय, सो व्युत्सर्ग नाम तप भाय।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।१३।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

थिर मन आर्ति रुद्र परिहार, सो ही ध्यान नाम तप भाय।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।१४।
ॐ ह्रीं ध्यानतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

ए तप द्वादश शिव मग जान, तपके करत होय उर ज्ञान।
याकौ करै अचारज सोय, ते गुरु जजौं भाव शुभ होय।१५।
ॐ ह्रीं द्वादशतपसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

(बेसरी छन्द)

सब जीवनतैं समता भावा, उत्तम धर्म सु शिवमग नावा।
याकौ आचारज नित भावै, तिन पद जजौं भाव सुख ध्यावै।१६।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

मानभाव सबही निरवारा, मार्दव धर्म जान यह प्यारा।
याकौ आचारज उर आनै, तिन पद जजौं फलै अघहानै।१७।
ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

कुटिलाई जिनके उर नाहीं, आर्जव भाव धरम हित ठाहीं।
याकौ आचारज उर आनै, तिन पद जजौं फलै अघहानै।१८।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

काय जाय पै असत न भाखें, सत्य धरम अपनो दिढ राखै।
याकौ आचारज उर आनै, तिन पद जजौं फलै अघहानै।१९।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

पारकी वस्तु चाह नहिं ताकै, शौचभाव निरमल उर जाकै।
याकौ आचारज उर आनै, तिन पद जजौं फलै अघहानै।२०।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

इन्द्रिय कसै जीवको पालै, सो संजम धर्म अघको टालै।
याकौ आचारज उर आनै, तिन पद जजौं फलै अघहानै।२१।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

द्वादश तप दो विधि मनलाया, सो तप धरम शिवा सुरदाया।
याकौ करै आचारज सोही, तिन पद जजौं रहौ नहिं मोही।२२।

ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

तन धन आदि वस्तु पर जेती, ममत नहीं दीसै तन सेती।
यो तप त्याग आचारज धारै, तिन पद जजौं फलै अधहानै।२३।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

दो विधपरिग्रह त्यागसु नगना, सोहि अकिंचन धर्मसु मगना।
याकौ आचारज उर लावै, तिन पद जजौं फलै शिव पावै।२४।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

मन वच तन नारीका त्यागा, सो धर्म ब्रह्मचर्य भव भागा।
याकौ करै अचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।२५।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

श्री दिगंबर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ - ३६४२५०

ये दश धर्म कर्म क्षयकारी, इनतें जाय पाप भय हारी।
आचारज इन धर्मको धारें, तिन पद जजौं पाप क्षय कारें।२६।

ॐ ह्रीं दशधर्मसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

आरत रौद्र भावको त्यागै, सो सामायिकके मन लागै।
याकौ करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै सुख होई।२७।

ॐ ह्रीं सामायिक-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

अर्हंत सिद्धकी जो थुति कीजै, सो स्तवन आवशि गिन लीजै।
याकौ करै अचारज सोई, तिन पद जजौं फलै सुख होई।२८।

ॐ ह्रीं स्तवन-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

बन्दन नमस्कार नय कीजै, अर्हन्त सिद्ध को शीश नमीजै।
याकौ करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।२९

ॐ ह्रीं वन्दना-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

लगे दोषको जो निरवारै, सो आवशि प्रतिकर्म सुधारै।
याकौ करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।३०।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमण-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

मन वच काय पाप विधि त्यागी, प्रत्याख्यान अवशि तहं जागी।
याकौ करै आचारज सोई, तिन पद जजौं रहो नहिं मोही।३१।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

निरमोही तनका तिन त्यागी, कायोत्सर्ग आवशि तह जागी।
याकौ करै आचारज सोही, इन पूजा फल रहै न मोही।३२।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग-आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

ए षट् आवशि करै मुनीन्दा, सो जगनाथ हरै भव फंदा।
आचारज इन गुनके धारी, तीन पद ढोक अरघ दे भारी।३३।

ॐ ह्रीं षट्आवश्यकसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

(चौपाई)

मनकपि ध्यान रस्सी बंधवाय, पापविचार विषै नहिं जाय।
आचारज मन इमि वश करै, तिन पद जजौं फलैं अघ हरै।३४।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

वचन कहै जिनधुनि अनुसार, वचनगुप्ति जानौं ते तार
याको आचारज प्रतिपालै, तिन पद जजौं फलैं अध टालैं।३५।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

काय थकी अघकाज न करै, ध्यानाध्ययन मांहिं संचरै।
काय गुप्ति आचारज ध्याय, तिन पद जजौं सुभग फलदाय।३६।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

येही तिन गुप्ति सुखकार, मन वच तन अध रोकनहार।
इनको करै आचारज सोय, तिनके पद पूजौं मद खोय।३७।

ॐ ह्रीं तीनगुप्ति सहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

(वेसरी छन्द)

ज्ञानाचार ज्ञान सुध आनै, सकल पदारथ भेद बखानै।
याको करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै सुध होई।३८।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

दर्शनाचार दृष्टि सुध लावै, दोष पच्चीस तहा नहिं पावै।
याको करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै सुख होई।३९।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तेरह विध शुभ चारित धारै, सहै परीषह आप न हारै।
याको करैं आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।४०।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तप बहु करै खेद नहिं आनै, तपाचार सो अघगिरि भानै।
याको करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।४१।

ॐ ह्रीं तपाचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

वीर्याचार शक्ति को फोरै, शिवमग लहै कर्म-अरि तोरै।
याको करै आचारज सोई, तिन पद जजौं फलै शिव होई।४२।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

(अडिल्ल)

द्वादश तप दश धर्म षडावशि जानिये,
तीन गुप्ति आचार पंच सब मानिये।
ये छतीस गुन धरै आचारज होयजी,
तिन पद पूजौं अर्घ लेय मद खोयजी।४३।

ॐ ह्रीं छत्तीसगुणसहित-आचार्यभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जयमाला

(मुनियनानन्दकी चाल)

संघके नाथ आचार्य सो होय है,
तिन विषैं भलै गुन तीस षट् सोय है।
और गुन घनै तिन माहिं शुभ पाईये,
इन चरण भक्ति फल तीर्थ पद गाईये।१।

मति श्रुत अवधि इन आदि होय ज्ञानजी,
कहै भव्य जीवको भवांतर जानजी।
मन विषै भक्ति के होय सो पाइये,
इन चरण भक्ति फल तीर्थपद गाइये।२।

कहै उपदेश जिस जीव साता लहै,
सुरग शिव राह निज जान आनिको कहै।
बिगर कारण सकल सत्त्वबन्धु पाइये,
इन चरण भक्ति फल तीर्थ पद गाइये।३।

सकल श्रुति जान अभिमान ताकै नहीं,
फुरी बहु ऋद्धि गुन थूल तिन उर महीं।
तीन जगपूज्य बिन राग सम पाइये,
इन वरन भक्ति फल तीर्थपद गाइये।४।

(दोहा)

इन्हैं आदि आचार्यमें, गुण पावत हैं सार।
जे भवि इनपद थुति करै, तै उतरैं भवपार।।५।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनायै पूर्णार्घ्यं नि० ।।११।।

❁ ❁ ❁

१२. बहुश्रुतभक्तिभावना-पूजा

(अडिल्ल)

एकादश अंग पूरव चौदह धारजी,
शिष्यनको जु पढावैं तपके भारजी।
ऐसे गुणके धार उपाध्याय सारजी,
पूजौं इन पद थापन कर थुति धारजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावना ! अत्र तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(मुनयनानन्दकी चाल)

नीर शुभ निरमलो गंगको लाइये,
कनकझारी भरौं भलियुतिगाइये।
तीर्थपददाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै जलं नि० ।।१।।

नीर घसी बावनो चन्दना सारजी,
भक्ति कर कनकके पात्रमधि धारजी।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत-भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै चन्दनं नि० ।।२।।

अक्षता उज्वला खंड- बिन सारजी,
मुक्तफल समा शुभ पात्रमें धारजी।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अक्षतान् नि० ।।३।।

फूलसुरद्रुमके गंध शुभ रंगमई,
गूंथकर मालको हाथ अपनैं लई।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत-भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै पुष्पं नि० ।।४।।

सुभग रस लेय नैवेद्य कर लाईए,
पात्र घर सुभग मुख भक्ति गुण गाइये।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीप मणिमय सुभग जोति परकाशिका,
धार शुभ पात्र कर आरती दासिका।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै दीपं नि० ।।६।।

धूप दस विधि करी गंध बहु धारजी,
अगनि मधि खेवने चले सुखकारजी।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै धूपं नि० ॥७॥

श्रीफला लौंग शुभ खारिका जानिये,
आदि इन फला ले भक्ति चित ठानिये।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै फलं नि० ॥८॥

नीर गंध तंदुला फूल नैवेद्यजी,
दीप शुभ धूप फल अर्घनिरखेद जी।
तीर्थपद दाय सुन लोभ उर आयजी,
पूजिहौं बहुश्रुत भाव मन कायजी॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(मुनयनानन्द की चाल)

अंग एकादशा पूर्व चौदह सही,
इन सबै जान बहुश्रुत गुणकी मही।
जजैं इनको तिको इनपदी पायजी,
मैं जजौं बहुश्रुत-भक्ति मन लायजी।१।

ॐ ह्रीं ग्यारहअंग-चौदहपूर्वगुणधारक-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जतनतैं चालिये जतन उठ बैठजी,
जतनतैं काज सब करै गुन पैठजी।

अंग आचार मधि जतनतैं अघ नहीं,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं पुन्यमही॥२॥

ॐ ह्रीं आचारांगसहितबहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

विनय विधि और अध्ययन श्रुतको सही,
आप मत और मत भेद ता मधि कही।
सूत्रकृतांग अंग माहिं इम जानिये,
या धरा मुनि बहुश्रुत थुति आनिये॥३॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तहां जिय थान इक आदि उगणीसजी,
षट् अधिक चार शत कहे जगदीशजी।
यह स्थानांग माहिं सब ही इम कही,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं शुभ मही॥४॥

ॐ ह्रीं स्थानांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

काल द्रव्य क्षेत्र इन आदि सब गाइये,
सपल सम वस्तु जो जगतमें पाइये।
सकल समवाय अंग माहिं या विध कही,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं शुभ मही॥५॥

ॐ ह्रीं समवायांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जीव अस्ती तथा नास्ती है सही,
एक वा अनेक जिय आदि सब विधि कही।
अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति नाममें इम चयो,
या धरा मुनि बहुश्रुत पद जजि नयो॥६॥

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तीर्थ जिनदेवके कहे अतिशय सही,
दिव्यधुनि समोसर्ण आदि शोभा कही।

अंग ज्ञातृकथा माहिं इम सब कहै,
या धरा मुनि बहुश्रुत पद जजि लहै॥७॥

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

प्रतिमा भेद ग्यारह तहाँ वरणए,
और आचार श्रावक तनैं बहु चए।
उपासकाध्ययन सो अंग या विधि कही,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं सुख मही॥८॥

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

एक इक तीर्थ समै ए सु दस दस भए,
आयु अंत काय तजि ज्ञान ले शिव गए।
अंत कृतांग दश माहिं इन विधि कही,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं शुभ मही॥९॥

ॐ ह्रीं अंतःकृतदशांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

एक इक जिन समय भए दस दस मुनि,
आयु अंत काय तजि पदी अहमिंद ठनी।
यह अनुत्तरोपपाद अंग दश इम कही,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं थुति ठही॥१०॥

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

गई वस्तु तथा मूठितनी जानजी,
और होनहार विधि लखै सब आनजी।
प्रश्न व्याकरण अंग धार उत्तर करै,
या धरा मुनि बहुश्रुत जजौं अघ हरै।११।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

शुभाशुभ कर्मका फल तिको जानिए,
तीव्र मंद जैसे अनुभाग रस आनिए।

सूत्र सु विपाक अंग माहिं इम भास है,
या धरा मुनि बहुश्रुत थुति राशि है॥१२॥

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

अंग आचार इन आदि ग्यारह सही,
महाश्रुतज्ञान यह ऋद्धि बहु इस मही।
तीन जग गुरु जग नाथ मुनि सोयजी,
अंग सब धार बहुश्रुत जजौं जोयजी।१३।

ॐ ह्रीं ग्यारह अंग सहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

चौदह पूर्व अर्घ

वस्तु उत्पाद व्यय ध्रौव्य लक्षण सही,
द्रव्य पर्याय गुण साधनादिक कही।
पूर्व उत्पाद सो तासमें इम चयो,
या धरा बहुश्रुत पाय मैं सिर नयो॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तासमें सुनय वा कुनय व्याख्यानजी,
द्रव्य खेतर तनैं भावकौ मानजी।
कथन इन आदि अग्रणि पूरव कह्यो,
या धरा बहुश्रुत पाय जजि धनि भयो।१५।

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

आत्म वीरज तथा काल वीरज सही,
भाव तप वीर्य वा क्षेत्र वीरज कही।
वीर्य अनुवाद पूरव विषैं इम कह्यो,
या धरा बहुश्रुत पाय जजि धनि भयो।१६।

ॐ ह्रीं विर्यानुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

द्रव्य अस्ती तथा नास्ती इम कह्यो,
भावद्रव्य क्षेत्र काल आदि तहां सब चयो।
पूर्व अस्तिनास्तिमें कही ए विधि सही,
या धरा बहुश्रुत पाय जजि पुण्य मही॥१७॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

ज्ञान वसु मति श्रुत आदि जे फल कहे,
और सब ज्ञान के भेद वरणन ठहे।
ज्ञानपरवाद पूरव तिको जानिए,
या धरा बहुश्रुत जजौं थुति ठानिये॥१८॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

वचनके भेद सत असत अनुभय उभय,
समिति गुप्ति तने भाव भाखे समय।
सत्यपरवाद पूरव विषैं सब कहे,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच ठये॥१९॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जीव निश्चय नय और व्यवहार है,
जीव अस्तित्व विधि कथन अनुसार है।
पूर्व यह आत्मपरवाद में सब कही,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच सही॥२०॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

कर्मबन्ध उदय सत मूल कर्म जानिए,
प्रकृति उत्तरतनैं भेद बहु आनिये।
कर्म परवाद पूरव विषैं इम कही,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच सही॥२१॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

ता विषैं समिति व्रत तप निदेशा सही,
सकल अघ त्यागकी रीति तामैं कही।
यह प्रत्याख्यान पूरव सबै वरणयो,
या धरा बहुश्रुत जजौं सब अंग नयो॥२२॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

ता विषैं तप विद्या साधने मंत्रजी,
विद्या सामर्थ्य फल और विधि अन्यजी।
पूर्व विद्यानुवादा विषैं इमि कहीं,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच सही॥२३॥

ॐ ह्रीं विद्यानुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तीर्थ जिन जन्म कल्याण आदिक सही,
भानु शशि जोतिषी और महिमा कही।
पूर्व कल्याण इस वादमें इम चयो,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच नयो॥२४॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

वैद्य ज्योतिष कथन तासमें पाइये,
यंत्र विष नाशनै मंत्र जहाँ गाइये।
यह सब पूर्ण प्राणानुवादमें कही,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन वच सही॥२५॥

ॐ ह्रीं प्राणनुवादपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

छंद अलंकार संगीत नृत तहां कहे,
त्रिय चौसठ कला शिल्प विधि सब ठहै।
पूर्व किरिया सु विशाल में इम कही,
या धरा बहुश्रुत जजौं मन तन सही॥२६॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

कथन त्रयलोकका मोक्ष साधन सही,
गिनति जानन करण सूत्र विधि सब कही।
पूर्व त्रयलोकबिंदु माहिं यह सब कह्यो,
या धरा बहुश्रुत पूज मैं धनि भयो॥२७॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकबिन्दुपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

अंग ग्यारह भले पूर्व चौदह सही,
भेद इनका लहै गुरु ते हम कही।
पढै जिनपाठ औरन थकी कहतजी,
जजौं ते बहुश्रुत ज्ञानगुण सहितजी॥२८॥

ॐ ह्रीं ग्यारहअंग चौदहपूर्वसहित-बहुश्रुतभक्ति-भावनायै महाऽर्घ्यं नि०।

जयमाला

(मुनयनानन्द की चाल)

बहुश्रुत जगतगुरु सकल गुणधार है,
श्रुतसागरतनों लहै प्रभु पार है।
राग बिन जगतके बंधु सम हितकरा,
नमौं तिन चरण फल होय मोय अघहरा॥१॥

आप पढि शिष्यनको देत उपदेशजी,
तासको धार भव्य शहैं मुनि वेषजी।
ध्यान-ध्ययन माहिं निशदिना सुखमय खरा,
नमौं तिन चरण फल होय मो अघहरा॥२॥

करै बहुभांति तप ऋद्धि तिनपै घनी,
पापकी बेल जड़मूलतैं सब हनी।
करत दर्शन लहै पुण्य बड़ शुभधरा,
नमों तिन चरणफल होय मो अघहरा॥३॥

नाम गुरुको लिए ठाम नीकी लहै,
ज्ञान उर ऊपजै पाप अरिको दहै।
बहुश्रुत भक्ति तैं भरम भागे खरा,
नमौं तिन चरण फल होय मो अघहरा॥४॥

चहौं भव भव विषैं भक्ति बहु शास्त्रकी,
और नहिं चाह मोहि राज सब भरत की।
अरज यह मो तनी भक्ति दे जग गुरा,
नमौं तिन चरण फल होय मो अघहरा॥५॥

(दोहा)

भक्ति उपाध्यायकी किए, भव उपाधि सब जाय।
मरण मिटै जनमै नहीं, इमि लख पूजत पाय॥६॥

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥१२॥

१३. प्रवचनभक्तिभावना-पूजा

(अडिल्ल)

जिनकी वाणी सिद्धान्त अंग ग्यारह सही,
चौदह पूरब और प्रकीर्णक धुनि कही।
षटकायिक जिय राखन को जननी समा,
सो इहां थापि जजौं काय मन वच रमा॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(चौपाई)

पदमकुण्ड को निरमल नीर, रतनजडित झारि धरि धीर।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, तातैं जनम मरण नहिं होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

चंदन बावन घस जल डारि, कनक पियालै धर हित धारि।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ता फल भव तप कबहुं न होय।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत मुक्ताफल सम जान, पातरमें धरि निज कर आन।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ता फल अखयथान शिव होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

फूल कनक कल्पवृक्ष के लाय, माल करी मनमें हरषाय।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ता फल काम नाश सब होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

नाना रस नैवेद्य बनाय, सुभग पात्र में मोदक लाय।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ताके फल क्षुध्या नहिं होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

रतन दीप तम नाशक जान, कनक थाल भर आरति ठान।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ता फल मिथ्यातम क्षय होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप करी दस विधि गंधलाय, अगनि माहिं खेऊं हरषाय।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ता फल अष्ट करम क्षय होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

श्रीफल खारक लौंग बदाम, पूंगीफल आदिक शुभ नाम।
पूजौं प्रवचन जिनधुनि सोय, ताके फल शिवको पद होय।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

नीर गंध तंदुल पुष्प जान, चरु दीपक फल धूप बखान।
पूजौं प्रवचन अर्घ संजोय, ता फल आवागमन न होय॥

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

एकादश अंग जिनकी बान, तामधि नाना भेद बखान।
ये सब संशय नाशनहार, पूजौं प्रवचन है सुखकार॥१॥

ॐ ह्रीं एकादशअंगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

चौदह पूरव जिन धुनि सही, मिथ्यातम नाशन रवि कही।
ये सब संशय नाशनहार, पूजौं प्रवचन है सुखकार॥२॥

ॐ ह्रीं चौदहपूर्वसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

प्रकीर्णक अंगे प्रवचन सार, ताके चौदह भेद निहार।
ते सब संशय तम-हर-सूर, सो मैं जजौं भाव भरपूर॥३॥

ॐ ह्रीं प्रकीर्णक अंगसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

सब जीवनतैं समताभाव, तप संजम करने अति चाव।
सो सामायिक प्रवचन जान, पूजौं मैं वसु द्रव्य जु आन॥४॥

ॐ ह्रीं सामायिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तामैं चौबिस जिन कल्यान, और तिन्होंका स्तवन जान।
चतुर्विंश स्तवन अंग सोय, सो मैं जजौं भाव शुद्ध होय॥५॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवनसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जिन प्रतिमा जिन नाम सुभाय, तीर्थङ्कर इनको सिरनाय।
वंदन प्रवचनमें इम कही, सो मैं जजौं शुद्ध चित सही॥६॥

ॐ ह्रीं वंदनासहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

किये दोष तातैं क्षय होय, तामें ऐसो कथन जु होय।
जो प्रतिक्रमण प्रवचन जान, सो मैं जजौं भक्ति उर आन।।७।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

देव धर्म गुरु विनय बखान, और विनय विधि बहुती जान।
विनयक अंगमें यह विधि कही, सो मैं जजौं अरघ ले सही।।८।।

ॐ ह्रीं वैनयिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

पंच परमेष्ठी थुति विधि तहां, नमस्कार प्रदक्षिण जहां।
कृतीकर्ममें यह विधि कही, सो मैं जजौं भाव शुभ मही।।९।।

ॐ ह्रीं कृतिकर्मसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

मुनि इम अहार करे इम चलै, जती आचार और तहां मिलै।
दशवैकालिक इस विधि कही, सो मैं जजौं भाव शुभ ठही।१०।

ॐ ह्रीं दशवैकालिकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

परिषह सहन सहन उपसर्ग, इनका फल परसनके वर्ग।
उत्तराध्ययन विषैं इम कही, सो मैं जजौं भाव शुध मही।।११।।

ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

यह मुनि योग्य आचरण जोय, भए अयोग्य दंड ले सोय।
कल्पविहार अंग इम कही, ते मैं जजौं भाव शुध मही।।१२।।

ॐ ह्रीं कल्पविहारसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

या द्रव्य खेतर काल रु भाव, मुनिकी क्रिया योग्य यह ठाव।
कल्पाकल्प अंग इम कही, ते अंग जजौं शुद्ध चित सही।।१३।।

ॐ ह्रीं कल्पाकल्पसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जिनकल्पी थिरकल्पी साध, और महा नर क्रिया समाध।
महाकल्पमें या विधि कही, ते अब प्रवचन पूजौं सही।।१४।।

ॐ ह्रीं महाकल्पसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

चार प्रकार देव किम होय, तहां उपजन की तपविधि सोय।
पूजा दान आदि तहँ जान, सो पुंडरीक जजौं अंग मान।।१५।।

ॐ ह्रीं पुंडरीकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

इन्द्र अहमिंद्र होनको सही, तपश्चरण आदि विधि सब कही।
महापुंडरीक अंग सो जान, ते मैं जजौं अरघ शुभ आन।।१६।।

ॐ ह्रीं महापुंडरीकसहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

क्रिया प्रमाद थकी अघ सोय, ताके नाश होन विधि जोय।
सो निषद्यका अंग में कही, सो मैं जजौं भाव शुध सही।।१७।।

ॐ ह्रीं निषद्यकासहित-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

अंग पूर्व परिकीरण अङ्ग, जिन मुखतैं उपजे शुभ रंग।
सो सिद्धांत जगत हितकार, सो मैं जजौं दयोदधिसार।।१८।।

ॐ ह्रीं जिनमुखउत्पन्न-प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जयमाला

(दोहा)

यह जिनवानी जगत हित, करुणासागर जान।
षट्कायिक रक्षक जननि, सो जजि हौं सुखदान।१।

(बेसरी छन्द)

यह जिनवानी शिवसुखदानी, लगे पाप नाशै तिन मानी।
यातैं सुरग मोक्षको पावै, तातैं भवि हम शीश नवावै।।२।।

या बिन उरके पट नहिं खूटै, या बिन कर्मबन्ध नहिं छूटै।
यह भवदधिकी नाव बतावै, तातैं भवि हम शीश नमावै।।३।।

याहीतैं मुनिगन शिव पाया, या बिन आतम जग भरमाया।
सफल भया जब जिनधुनि पावै, तातैं भवि हम शीष नमावै।४।

यह जिनवानी भुवनत्रय दीवा, यातैं निजपद लखै सुजीवा।
दयानिधान जगत जस गावै, तातैं भवि हम शीष नमावैं।।५।।

हरि सुर याको पूजै भाई, याही फलतैं सुरलछि पाई।
गणधर मुनि याको नित ध्यावै, तातैं भवि हम शीष नमावै।६।

(दोहा)

जिनवानी गुन कहन को, समरथ नाहीं कोय।
ता ध्याये जिनपद मिले, इमि लख पूजौं सोय।।७।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनायै अर्घ्यं नि०।

१४. षट्आवश्यकभावना-पूजा

(गीता छन्द)

सामायिक स्तवन प्रतिक्रम वन्दना मन लाइये,
फिर प्रत्याख्यान जु कायोत्सर्ग मिल अवश्य षट् विधि पाइये।
यह करै मुनिवर रोज निहचै अवशिकै बिसरै नहीं,
इहां थापि षट् आवसि सुभावन पूज हौं मन वच ठही।।

ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावना ! अत्र तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(पद्धडी छन्द)

गंगा जल निरमल गंध धार, धरि रतनझारि लायो विचार।
मन वचन काय शुभ भक्ति लाय, पूजौं षट्-आवशि शीश नाय।।

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै जलं निर्वपामिति स्वाहा।।१।।

चन्दन घसी निरमल नीर डार, धर सुभग पात्रमें थुति उचार।
जिनको पद या फल होय आय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावनायै चन्दनं नि० ॥२॥

अक्षय अखंड उज्वल सुगंध, मुक्ताफल मानो धरै स्कंध।
धर भक्तिभाव ले हाथ आय, पूजौं षट् आवशि शिश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै अक्षतान् नि० ॥३॥

पुष्प कल्पबेलके गंध धार, नाना रंगधारी शुभ अकार।
तिनकी कर माला भक्ति लाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै पुष्पं नि० ॥४॥

नाना रसजुत नैवेद्य जान, कर मोदक शुभ आचार ठान।
धरि सुभग थाल उर भक्ति भाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै नैवेद्यं नि० ॥५॥

मणिदीप ज्योतिमय तमविनाश, भरथाल आरती थुति प्रकाश।
अंग सकल नाय मन शुद्ध लाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै दीपं नि० ॥६॥

ले अगर आदि दशगंध सोय, कर इकठी धूप बनाय जोय।
खेऊं अगनीमें भक्ति लाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै धूपं नि० ॥७॥

श्रीफल बिदाम खारक अनूप, पुंगीफल पिस्ता लौंग रूप।
धर भले पात्रमें भक्ति लाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै फलं नि० ॥८॥

जल चंदन तंदुल पुष्पसार, चरु दीप धूप फल अरघ धार।
धर भक्ति भाव ले आय पाय, पूजौं षट् आवशि शीश नाय॥

ॐ ह्रीं षट् आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

प्रत्येक अर्घ्य

(चौपाई)

सब जीवनतैं समता भाव, तप संयम करनेको चाव।
सो सामायिक आवशि जोय, मैं पूजौं वसु द्रव्य संजोय।।

ॐ ह्रीं सामायिकसहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

चौबीसौं जिनकी थुति होय, स्तवनावश्यक कहिये सोय।
ताको वसु द्रव्य अर्घ बनाय, पूजौं मन वच भक्ति लगाय।।

ॐ ह्रीं स्तवनसहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

सो जिनवर को शीश नमाय, पूजा विधि ठानै मन लाय।
वंदनआवश्यक कहिये सोय, ताको पूजौं अर्घ संजोय।।

ॐ ह्रीं वंदनासहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जो प्रमादतैं लागै दोष, ताको दूर करनको पोष।
सो प्रतिक्रमणावश्यक जान, पूजौं अर्घ्य धार सो आन।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणसहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

पापक्रियाको त्याग सुजान, वरतैं सावधान बुधिवान।
प्रत्याख्यानावश्यक सो जोय, ताकों मैं पूजौं मद खोय।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानसहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

मन वच तनका त्यागी होय, वरतैं ममत रहित चित सोय।
कायोत्सर्गावश्यक जान, याको मैं पूजौं मन आन।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गसहित-षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

ए षट् आवश्यक मुनि करै, इन बिन वरत दोष को धरै।
तातैं अवश्य करै मुनिनाथ, मैं यह भाव जजौं सिर हाथ।।

ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

ये षट् आवश्य मुनि धर्म राखै, खेत बाड ज्यों रक्षा भाखै।
अवश्य करै तातैं सुनि भाई, आवश्यक वानी जिन गाई॥१॥

आवश्य भाव जजै जो प्रानी, सो शिव अवशि लहै अघ हानी।
तीर्थङ्कर पद यातैं पावै, अवश्य नांहिं जगमें भरमावै॥२॥

आवशि हरै पापकी धारा, आवशि अवशि करै कर्म न्यारा।
आवशि मुनि धर्म तरु जड़ जानो, आवशि मुनिपद मित्र बखानो।३।

आवशि अवशि भावना भावै, ते भव अवशि अमर हो जावै।
आवशि ध्यान आवश्यक धारै, सो प्राणी कर्म अरिको मारै।४।

आवशितैं आरति नश जावै, आवशितैं आतम हित पावै।
हरै पाप वृषको उमगाया, तातैं आवशि भाव सुभाया।५।

आवशि समता भाव बढावै, आवशि तप संजम समझावै।
आवशि जिनथुति जाननहारा, आवशि प्रभु पूजा विधि सारा।६।

आवशि लगे पापको धोवै, आवशि पाप त्याग विधि जोवै।
आवशि तनतैं नेह तुडावै, सो आवशि मैं जजौं सुभावै॥७॥

(दोहा)

आवशी भाव अनूप धर्म, भावै धर्म सुभाव।
लहै तीर्थपद सो भविक, आवशि भाव कराव।८।

ॐ ह्रीं षट्आवश्यक-भावनायै अर्घ्यं नि०।

❑ ❑ ❑

१५. मार्गप्रभावना-भावना-पूजा

(अडिल्ल)

मन वच तन धन लाय बुद्धि तप भावतैं,
धर्म उद्योत करै भवि अति ही चावतै।
मार्ग प्रभावना-भाव तीर्थपद दायजी,
सो मैं थापन थाप जजौं थुति लायजी॥

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावना ! अत्र तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(मुनियनानन्द की चाल)

क्षीरदधि तनो ले नीर निरमल सही,
कनकझारी धर्यो महा पुण्यकी मही।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्गपरभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै जलं नि० ॥१॥

चन्दना नीर घसि गंधमय सारजी,
सुभग पातर विषैं जुगततैं धारजी।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्गपरभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै चन्दनं नि० ॥२॥

अक्षता खंड-बिन वीन नखसिख सही,
उज्वला कली जिम जाय कैसी कही।
तीर्थपदलोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठांहिजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै अक्षतान् नि० ॥३॥

फूल सुरवृक्षके गंधमय सारजी,
रंग शुभ लेय कर माल थुति धारजी।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

लाय नैवेद्य रस धार सुखकारजी,
मोदकादिक सुभग थालमें धारजी।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

दीप तमके हरा रतनके लायजी,
थाल भर आरती भक्ति बहु भायजी।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

धूप शुभ गंधकी धार मन लायकै,
अग्निमें खेय हौं भक्ति मुख गायकै।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै धूपं नि० ।।७।।

श्रीफला लौंग पूंगीफला आनजी,
और फल सुभग ले पात्रमें ठानजी।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै फलं नि० ।।८।।

नीर गंध अक्षता पहुप चरु लाइये,
दीप फल धूप कर अर्घ गुन गाइये।
तीर्थपद लोभको धार मन माहिंजी,
पूजिहौं मार्ग-परभावना ठाहिंजी।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥९॥

प्रत्येक अर्घ

(मुनियनानन्दकी चाल)

द्रव्य बहु खरच जिनमंदिर बनवाय है,
तीर्थ सिद्धक्षेत्रको संघ चलवाय है।
दीनको दान देय दया मन लायजी,
सो जजौं मार्ग-परभावना भायजी।

ॐ ह्रीं द्रव्यतैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥१॥

आप लखतैं नहीं धर्म घाते सही,
धर्मके कारणै मरण भांडे मही।
तास लख जोर बहु सकल कंपै जना,
जोरतैं धर्म-परभाव पूजौं घना॥

ॐ ह्रीं शक्तितैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥२॥

हुकुम ताके थकी सकल कंपै मही,
देख धरमी नहीं धर्म लंघै नहीं।
धर्मधोरी महा धर्मका धारजी,
जजौं यह भाव परभावना सारजी॥

ॐ ह्रीं आज्ञातैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥३॥

देख तप तास सब चकित मनमें रहै,
देहतैं ममत तज वास दुद्धर लहै।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

नाहिं मोही तबै काज ऐसो बनै,
तप थकी मार्ग-परभाव इह जज नमैं।।

ॐ ह्रीं तपतैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।४।।

मन सदा धर्म-परभावना चाहि है,
इन्द्र चक्री जिसा उछव मन भाय है।
देख सुन धर्म उद्योत सुख पायजी,
मन थकी धर्म-परभाव जज भायजी।।

ॐ ह्रीं मनतैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।५।।

देख तिस ज्ञान जग महा चक्रित रहै,
ज्ञान केवल थकी कालत्रयकी कहै।
ज्ञान ऐसो नहीं और मत पायजी,
ज्ञान कर धर्म-परभाव जज भायजी।।

ॐ ह्रीं ज्ञानतै मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।६।।

देख तिस दानको सकल अचरज लहै,
दान ऐसो नहीं और मतमें कहै।
या जिसो धर्म नहीं और जग इम कहै,
धर्म-परभाव जज दान कर शुभ लहै।।

ॐ ह्रीं दानतै मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।७।।

तासको न्याय लख जगत साता लहै,
या समा धर्म नहीं सकल ऐसै कहै।
न्याय कर धर्म जग माहिं परगट करै,
धर्मपरभावना भाय जज अघ हरै।।

ॐ ह्रीं न्यायतैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।८।।

देख प्रभुभक्ति ताको सबै धनि कहै,
या समा भक्ति जगमाहिं नहिं अनि रहै।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

भक्ति कर धर्म परगट करे सोयजी,
मार्गपरभावना भक्ति जज जोयजी।।

ॐ ह्रीं भक्तितैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।९।।

देख समभाव कहे धन्य है ताहिजी,
धर्म यासो नहीं और जग माहिंजी।
भाव समता थकी धर्म परगट करै,
मार्ग-परभाव जज सो सकल अघ हरै।।

ॐ ह्रीं भक्ति-समताभावतैं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।१०।।

और बहु धर्मके अंग हैं सारजी,
तिन थकी धर्म परगट करै भारजी।
काज सो ही करै जगमहिमा लहै,
सो जजौं मार्ग-परभावना अघ दहै।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

जयमाला

(दोहा)

धर्म उद्योत जासौं लहै, सो ही करिये काज।
ताफल तीर्थंकर बनै, लहै निरंजन राज।।१।।

(वेसरी छन्द)

धर्म-प्रभावना जो भवि ठानै, सो जगके सब पातक हानै।
धर्म प्रगट करि है जो प्रानी, सो प्रभावना अंग बखानी।।२।।

दान देय मनवांछित सोई, कल्पवृक्ष सम पूरै जोई।
ताकर धर्मोद्योत करावै, सो प्रभावना अंग कहावै।।३।।

संघ चलावै तीरथ ठाहीं, मनवांछित द्रव्य खर्च कराहीं।
विनय सहित उच्छव बहु आने, सो प्रभावना अंग बखानै।।४।।

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

जिनमन्दिर जिनबिंब करावै, फिर परतिष्ठा कर हरषावै।
करै उछाह धर्म-परभावा, सो प्रभावना अंग सुनावा॥५॥

तप बहु करै उग्र सुख पावै, सिंह-निःक्रीडित आदि करावै।
उग्रो उग्र महातप आनै, सो प्रभावना अंगको ठानै॥६॥

मतिश्रुत-अवधिज्ञानतैं भाई, मनपरजय आदिक सुखदाई।
इनतैं जगके संशय खोवै, सो प्रभावना अंगमय होवै॥७॥

(दोहा)

परभावनके भेद बहु, करै भव्य मन सोय।
ताको जिनपद होत है, अधिक कहै कहा कोय।८।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनायै अर्घ्यं नि० ॥१५॥

❁ ❁ ❁

१६. प्रवचनवात्सल्यभावना-पूजा

(अडिल्ल)

तिनकी वानी प्रवचन जगमें सार है,
करुणासागर सोई करत भव पार है।
याको वत्सल भाव प्रीति मन लाय है,
सो इहां प्रवचन थाप भावना भाय है॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावना ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावना ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावना ! अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्।

(बेसरी छन्द)

गंग सरितको निरमल नीरा, उज्वल सुभग गंधजुत वीरा।
भले पात्रमें धर थुति लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै जलं नि० ॥१॥

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

चन्दन बावन पावन कारी, घसिहौं नीर डार हितधारी।
कंचनझारी धर मन लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै चंदनं नि० ।।२।।

अक्षत उज्वल बीन अनूपा, नखशिख जुत मुक्ताफल रूपा।
भले पात्रमें धर कर लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अक्षतान् नि० ।।३।।

फूल गंध शुभ रंगके धारी, सुरतरु पुष्प भावना प्यारी।
गूंथ माल अपने कर लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै पुष्पं नि० ।।४।।

षटरस जुत नैवेद्य मिलाई, मोदक भले शोध कर लाई।
नीके पातरमें धर लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै नैवेद्यं नि० ।।५।।

दीपक रतनजोत परकासी, तमनाशक निर्धूम सुवासी।
कनकथाल भर आरति लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै दीपं नि० ।।६।।

धूप अगर चन्दनकी ठानी, दसविधि गंध और धर आनी।
अगनि मांहि मैं खेवन लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै धूपं नि० ।।७।।

श्रीफल लौंग सुपारी जानौं, खारक आदि भले फल आनौं।
सुथरे पातरमें धर लाई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै फलं नि० ।।८।।

नीर गंध अक्षत पुष्प भाए, चरु दीपक फल धूप सु लाए।
अरध करी अपने कर आई, पूजौं प्रवचनवत्सल भाई।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि० ।।९।।

श्री દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रत्येक अर्घ

(मुनियनानन्दकी चाल)

पत्र शुभ ऊजले पुष्ट चिकने सही,
दीर्घ मौली किए हर्ष मनकी मही।
तासमें बानि जिनसूत्र उतराइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥१॥

ॐ ह्रीं शुभ पत्रनि विषै लिखावन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

अंक चांदी तथा कनकके मांडिए,
सुभग आकार धर भक्ति अघ छांडिए।
या विधी हर्ष सिद्धान्त उतराइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥२॥

ॐ ह्रीं मनोज्ञ अक्षर लिखावन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

तास जर चिकन किमखाब मसरू सही,
और उत्किष्ट बहुमोल तिनको कही।
लाय उर भक्ति औछांड बनवाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥३॥

ॐ ह्रीं मनोज्ञ उछांड बंधन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

भले श्रुत राखने कनक चांदी तने,
काष्ठ के सुभग षट् उग्र तिनके बने।
करै पुट्ठा इसी भांति मन लाइए,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥४॥

ॐ ह्रीं सुभगपुट्ठा-करण-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

कनक मय जड़ित चांदी तने जानिए,
भरत वा घड़ति अनि धातु कर आनिये।

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

काष्ठ चित्राम चौकी सु बनवाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥५॥

ॐ ह्रीं बांचनेकी सुभगचौकीकरण-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

बांचिए वानि जिन मन वचन कायजी,
एक कर चित्त उर भक्ति उमगायजी।
वानि जिन विनयतैं पाठ पढ़वाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥६॥

ॐ ह्रीं विनयतैं शास्त्र पठन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

मन वचन काय थिर ठान जिन धुनि सुनै,
धारणा धार अघतैं डरै शुभ ठनै।
विनयजुत श्रवण कर आप धनि ध्याइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥७॥

ॐ ह्रीं विनयतैं शास्त्रश्रवण-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जाय पुस्तक धरै ठाम शुभ जोयजी,
विनयतैं काय मन शुद्ध अति होयजी।
जतनकूं राख मन हर्ष बहु लाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥८॥

ॐ ह्रीं विनयतैं शास्त्रधरण-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

जतनतैं लेय पुस्तक विनय ठानजी,
भक्ति मन वचन शुभ कायतै आनजी।
महा आदर करी शास्तर लाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥९॥

ॐ ह्रीं विनयतैं पुस्तकउठावन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

धरण पुस्तक भली ठाम बनवायबो,
नाहिं सरदी तहां टीप करवायबो।

विनयतैं पुस्तकें तहां धरवाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥१०॥

ॐ ह्रीं विनयतैं पुस्तकधारणस्थान करावन-प्रवचनवात्सल्य-भावनायै अर्घ्यं नि०।

अंग इन आदि बहु विनय विधि ठानिए,
प्रीति अति अन्तरै भक्ति शुभ आनिए।
जान जिनवानि आदर विनय लाइये,
भाव वात्सल्य प्रवचन जज भाइये॥११॥

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै महार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

वात्सल्य प्रवचन भावसौं, जिनधुनितै अति नेह।
विनय सहित वरतै सदा, सकल तिनौंकी देह॥१॥

(वेसरी छन्द)

जिनवानीतैं वत्सल भावा, मेटत है जगका सब दावा।
ताकी सुर नर सेव करावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै॥२॥

जो श्रुत सुनै भाव हरषावै, आपा-पर-भेदैं तत्व सु पावै।
तिनतैं सब जग प्रीत करावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै॥३॥

प्रवचन पाठ करै मनलाई, ताको जस गावै सुर राई।
ताकै पाप निकट नहिं आवै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै॥४॥

जिन धुनि सुनै हनै अघ सोही, याको भेद लहै नहिं मोही।
सारा जगकूं प्यारा थावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै॥५॥

विनय सहित पुस्तकको राखै, ताको विनय लोक सब भाखै।
प्रीति घनी जिनधुनितैं लावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै॥६॥

कनक रजत को स्याही ठानै, पत्र महा बन्ध मोला आनै।
तिनपै जिनधुनिको लिखवावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै।।७।।
बंधन श्रुतिको सुभग करावन, लावै पट जर रेशम पावन।
डोरी सुभग आन हरषावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै।।८।।
आगम धरने ठाम अनूपा, बनवावै दृढ़ सुन्दर रूपा।
तहां न सरदी चित्र करावै, जो जिय प्रवचनवत्सल भावै।।९।।

(दोहा)

इत्यादिक गुण जो लहै, दहै कर्मवन सोय।
भावै प्रवचन-भावना, अति चित वत्सल होय।।१०।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य-भावनायै महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सोलहकारण भावना, भावै जो भवि सोय।
सो पद तीर्थङ्कर लहै, घनी कहनतैं कोय।।१।।

(मुनियनानन्दकी चाल)

षोड़शकारण यह भावना भाय है,
तहां न मद आठ षट आयतन पाय है।
अष्ट सम्यक्तने दोष नहिं जानिए,
मूढता तीन नहिं ज्ञान शुद्ध आनिए।।२।।
विनय गुरु-देवकी राह जानै सही,
भूल अविनय विषैं बुद्धि राखै नहीं।
जगत जस पाय अघ ढाय समता लहै, जीव
सो भावना भाय षोडश यहै।।३।।
नारि पशु देवकी मनुषनी जानजी,
काठ चित्राम यह जीव बिन मानजी।

चार विधि नारि तजि शील भावन सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।४।।
ज्ञान उपयोग सो पाठ जिन धुनि करै,
श्रुति-अध्ययनमें नाहिं अन्तर परै।
पढै उपदेश करि प्रश्न बहुले सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।५।।
देख जग चपल नहिं विषय सुख राचि हैं,
मात सुत नारि तन माहिं नहिं मांचि है।
धरै वैराग्य उर माहिं आनन्द सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।६।।
त्याग धन तन करै राजलछि सारजी,
मात सुत पिता त्रिय देख बन्ध कारजी।
छांडि परभाव निजमाहिं राचै सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।७।।
करै तप दुद्धरा देख कायर डरै,
मास वर्ष पक्ष लौं नाहिं अनजल करै।
शीश गिरि तरुतल नदी तटपै सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।८।।
मुनि तन विषैं जिम होय साता भली,
सोहि विधि करै उर भक्ति भावां मिली।
साधुसमाधि यह भावना है सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।९।।
राह जब चले मुनि खेद तनमें लहै,
तथा बहु तप थकी काय निर्बल रहै।
देख इम तबै भवि पांव चंपै सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।१०।।

देव जिनराजकी भक्ति पूजा करै,
कंठ मधुरे थकी गान शुभ उच्चरै।
भक्ति अरहन्त सो भाव जे हैं सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।११।।

संघपति जगतगुरु तीस षट् गुणधरै,
लखै मन तनी भाव समता भरै।
धर्म तीरथ तने धीर धोरी सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।१२।।

अंग ग्यारह लखै पूर्व दस चार जी,
और गुन बने त्रय ज्ञान चव धारजी।
भक्ति इनकी यह भाव सुभदा सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।१३।।

भक्ति जिनवानि को करै मन लायजी,
मुनि आवशि करै भक्ति तिन भायजी।
भाव सो प्रवचन ज्ञान सुखदा सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।।१४।।

मन वचन काय धन लाय हरषायजी,
धर्म उद्योत करि पुण्य उपजायजी।
मार्गपरभावना अंग सुखदा सही,
कारण षोडश यह भावनामें कही।१५।

बानि जिन विनयतैं सुनै पढि है भली,
भाव वात्सल्य प्रवचन पुण्यकी रली।
या थकी भी महा पुण्यफल ले सही,
कारण षोडश यह भावना में कही।१६।

(दोहा)

इत्यादिक ए भावना, षोडश भेद अनूप।
भावै इनको भक्तितै, 'टेक' मोक्ष सिद्ध रूप॥१७॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, त्याग, तप, साधुसमाधि, वैयावृत्य, अरहंतभक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्गप्रभावना, प्रवचनवात्सल्य नाम षोडशकारणेभ्यः महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। इति षोडशकारण-भावना पूजा।।